पहली हिंदी पॉलीटिकल साइंस फिक्शन नॉवेल सीरीज

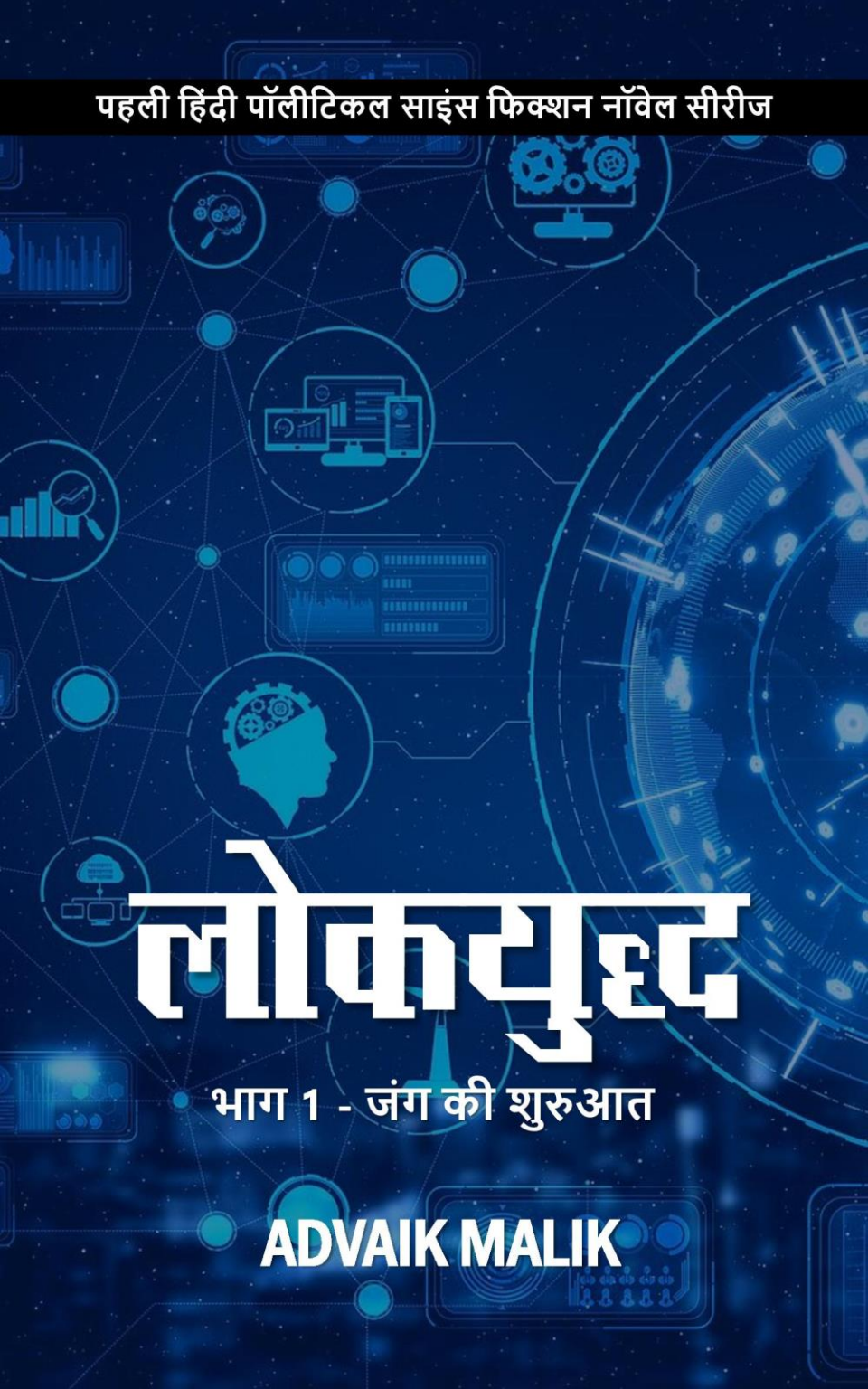

लोकयुद्ध

भाग 1 - जंग की शुरुआत

ADVAIK MALIK

लोकयुद्ध

भाग 1 - जंग की शुरुआत

ADVAIK MALIK

GOOD WRITERS PUBLISHING
(Since 2011)
www.goodwriters.in

Free ebook from www.advaikmalik.com

GOOD WRITERS PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.goodwriters.in*

© Copyright, 2023, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-5373-318-6

Price: Rs.149.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

Free ebook from www.advaikmalik.com

अनुक्रमणिका

•	किताब के बारे में कुछ शब्द	4
•	पात्र, स्थान एवं संस्थाओं के परिचय	5
•	शुरुआत से पहले	8
1	पुलिस का ऑफिस आना	10
2	सिटी मॉनिटरिंग सिस्टम की सोच	15
3	मेयर से मीटिंग और फिर केवल वेटिंग	19
4	आईडिया का शहर में वायरल होना	24
5	आम जनता पार्टी का नगर अध्यक्ष नियुक्त	28
6	अजीब प्रेस कांफ्रेंस	33
7	शहर में हाई टेक चुनाव प्रचार शुरू	38
8	पूर्व चुनाव में पार्षद टिकेट धांधली	42
9	संवैधानिक विरुद्ध नामांकित जिलाध्यक्ष	46
10	प्रदेश अध्यक्ष का शहर आ कर समझाइश	55
11	राजधानी से प्रदेश अध्यक्ष का ऑफर	59
12	राष्ट्रिय अध्यक्ष से अजीब मुलाकात	63
13	माइंड कम्युनिकेशन का पता चलना	68
14	सिस्टम नियंत्रण का पहला राज	72
15	अस्त्र निर्माण के तरीके का पता चलना	80
16	निगम और पुलिस को आदेश देना	82
17	वो अलग फर्स्ट फ्लोर	85
18	फिर जब सब कुछ बदल गया	87

Free ebook from www.advaikmalik.com

किताब के बारे में कुछ शब्द

कलियुग में जो युद्ध होगा उसका नाम होगा - लोकयुद्ध.
ये है - महाभारत के आगे की कहानी.
पढ़िए इसका पहला भाग - जंग की शुरुवात.

माइंड कम्युनिकेशन और थॉट कंट्रोलिंग जैसी चीजों का इस्तेमाल इस दुनिया में ताकतवर लोग और सरकारें आम जनता को कंट्रोल करने के लिए कर रही है.
लेकिन ये शक्तियाँ तो सिर्फ शुरुवाती चरण है, उस युद्ध का जो युगों से चला आ रहा है, दो ऐसी विचारधाराओं के बीच जो एक दूसरे से पूरी अलग है.
द न्यू वर्ल्ड आर्डर जिनका मानना था कि, संसाधनों पर सिर्फ योग्य और बुद्धिमान लोगों का अधिकार है, वहीं दूसरी तरफ द वर्ल्ड आर्डर जिनकी विचारधारा संसाधनों पर सभी के अधिकार पर विश्वास रखती थी, उनमे यह युद्ध छिड़ा हुआ था.
क्या होगा इस युद्ध का परिणाम, कौन जीतेगा, कौन हारेगा और अभी सत्ता किसके हाथ में है, ये सब जानने के लिए पढ़िए, देश की पहली हिंदी पॉलीटिकल साइंस फिक्शन नॉवेल "लोकयुद्ध" का पहला भाग - "जंग की शुरुआत".

Free ebook from www.advaikmalik.com

पात्र, स्थान एवं संस्थाओं के परिचय

- देव वशिष्ठ - कहानी के प्रमुख किरदार
- हिन्दराज - एक ऐसा देश जिसकी भौगोलिक, राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति भारत जैसी है.
- राजधानी - हिन्दराज की राष्ट्रीय राजधानी का नाम.
- बत्तीसगढ़ - देव वशिष्ठ का राज्य
- निवासपुर - देव वशिष्ठ का शहर
- कारोबा - बत्तीसगढ़ का एक दूसरा शहर जहाँ कोयला होता है.
- एजुक्रिएशन पब्लिशिंग - देव वशिष्ठ की कंपनी का नाम
- इन्डियन जन कांग्रेस (जनकांग्रेस) - हिन्दराज की सबसे पुरानी पार्टी जिसने देश की आजादी में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी लेकिन पिछले पंद्रह साल से केंद्र सरकार का चुनाव हार रही है. अधिकांश लोग इन्हें अल्पसंख्यक लोगों की समर्थक मानते हैं. इनकी बत्तीसगढ़ और देश के कुछ राज्यों में सरकार होती है.
- भारतीय कमल पार्टी (भाकपा) - हिन्दराज की दूसरी प्रमुख पार्टी जिसकी देश में सरकार है और जिसे अधिकांश लोग हिन्दू समर्थक मानते हैं.
- आम जनता पार्टी (आजपा) - एक नई पार्टी जो कुछ साल पहले ही देश भर में हुए भ्रस्टाचार के खिलाफ एक जन आन्दोलन के बाद बनाई गई और अपने बनने के बाद ही उसने देश की राजधानी में अपनी सरकार बना ली.

Free ebook from www.advaikmalik.com

- दीप्ति गोयल - देव वशिष्ठ की गर्लफ्रेंड और उसकी कंपनी की सीइओ
- आर्यन राय - देव वशिष्ठ का पुराना एंप्लॉय जिसके बड़े पापा निवासपुर के मेयर है.
- संगीता सोनी - देव वशिष्ठ की एम्प्लोय
- मनीष ठाकुर - देव वशिष्ठ का एम्प्लोय
- जतिन गहरवाल - राजधानी का मुख्यमंत्री और आम जनता पार्टी का संस्थापक और राष्ट्रिय अध्यक्ष
- वीरेंद्र योगी - हिन्दराज के प्रधानमंत्री, भारतीय कमल पार्टी
- शिवनाथ सिंधानी - आम जनता पार्टी के निवासपुर प्रभारी
- रेखा भंडारी - आम जनता पार्टी की निवासपुर विधानसभा अध्यक्ष
- मिथलेश शुक्ला - आम जनता पार्टी युवा मोर्चा, निवासपुर, जिला अध्यक्ष
- भागवत वर्मा - आम जनता पार्टी निवासपुर के कार्यकर्ता
- सीमा बत्रा - आम जनता पार्टी निवासपुर की कार्यकर्ता
- राज हुपेंडी - आम जनता पार्टी बत्तीसगढ़ का प्रदेश अध्यक्ष
- दिनेश ध्रुव - देव वशिष्ठ का ड्राईवर
- अनिल सिंह - देव वशिष्ठ का पड़ोसी, उनके पिता का मित्र
- सैयद गफ्फार - निवासपुर का पार्षद जिसकी चुनाव के बाद देहांत हो गया
- निधि वशिष्ठ - देव वशिष्ठ की बहन
- चैटएप - एक मेसेजिंग एप
- फ्रेंडबुक - देश में इस्तेमाल होने वाली सबसे बड़ी सोशल मीडिया वेबसाइट.
- फोटोग्राम - देश की एक और पॉपुलर सोशल मीडिया वेबसाइट.

Free ebook from www.advaikmalik.com

- व्यूट्यूब - ऐसी सोशल मीडिया साईट जिसमे लोग विडियो देखते और अपलोड करते हैं.
- फोनकॉलर - फोन का एक एप जिसमे कॉल करने वालों का नाम दिखाई देता है.
- डूडल - इन्टरनेट सर्च इंजन और बहुत बड़ी आईटी कंपनी.
- कफ़19 - एक ग्लोबल बिमारी जिसके कारण पूरी दुनिया में लॉकडाउन लगा दिया गया था.
- योयो होटल - एक ऐसा एप जिसके माध्यम से आप देश भर में होटल बुक कर सकते हैं.

Free ebook from www.advaikmalik.com

शुरुआत से पहले

दिनांक, 05 अक्टूबर 2040, चन्द्रमा और अनेकों ग्रहों में मनुष्यों और देवताओं का अस्तित्व प्रमाणित हो चुका था, जिसे सदियों से दुनिया पर राज करने वालों ने छुपा कर रखा था.
द वर्ल्ड आर्डर यानी मनुष्यों का वह संगठन जिसने इसे खोज कर दुनिया पर राज करने वालों के खिलाफ युद्ध छेड़ रखा था उसका नेत्रित्व कर रहे थे, 55 वर्षीय प्रोफेसर देव वशिष्ठ.
उस दिन चन्द्रमा में द वर्ल्ड आर्डर के कमांड सेंटर में प्रोफेसर देव वशिष्ठ युद्ध में शामिल होने के लिए तैयार किये जा रहे न्यू बैच को मंच से संबोधित कर रहे थे, तभी भीड़ में से एक शख्श प्रोफेसर देव वशिष्ठ से सवाल पूछता है कि, "प्रोफेसर, प्लीज हमें यह विस्तार से समझाएँ कि, पृथ्वी पर ये सब युद्ध क्यों हो रहा है? हम किनके खिलाफ और क्यों लड़ रहे हैं? ये युद्ध कबसे शुरू है? आप ने हम लोगों को ही क्यों चुना इस युद्ध में शामिल होने के लिए? आप खुद इसमें कब शामिल हुए? हम सब को प्लीज इन सवालों का जवाब दीजिये."
इन सवालों को सुनकर प्रोफेसर मुस्कुराते हुए कहते हैं - चलिए आप सब लोगों को मैं इस लोकयुद्ध के बारे में शुरू से बताता हूँ. शुरुवात करता हूँ इसी बात से कि, मैं इस युद्ध में कब, कैसे और क्यों आया? ये आज से करीब बीस साल पहले 2021 की बात है. मुझे घर छोड़े करीब 7 साल हो चुके थे और मैं देश की सबसे बड़ी बुक सेल्फ पब्लिशिंग कंपनी एजुक्रिएशन पब्लिशिंग का मालिक था.

Free ebook from www.advaikmalik.com

कंपनी की सीईओ मेरी गर्लफ्रेंड दीप्ति थी और कंपनी बहुत अच्छी चल रही थी, हमारे पास तीन-तीन कार थी, बहुत बड़ा ऑफिस था, बैंक में लाखों रूपए थे. शॉपिंग, मूवी, आउटिंग, फूडिंग, यही सब हमारी लाइफ बन गई थी.

ऑफिस में ही हमारा एक सेपरेट रूम था, जिसे हमने किसी फाइव स्तर होटल के कमरे जैसा बना लिया था, दीप्ति वैसे तो वर्किंग वूमन हॉस्टल में एनरोल थी लेकिन सिर्फ अपने घर वालों के लिए. वो और मैं रिलेशन में आने के बाद से ही मेरे ऑफिस के स्वीट में साथ रहने लगे थे. मेरे हर छोटे-बड़े फैसले में उसका अधिकार होता था और मुझे ये सब बहुत अच्छा भी लगता था.

दीप्ति और मैं एक ही कॉलेज से थे और उसने कॉलेज खत्म होने के बाद मेरे फ्रेंड विक्रांत को बोलकर मेरा ऑफिस ज्वाइन कर लिया था. विक्रांत मेरा कॉलेज का सबसे करीबी था और जब दीप्ति ने ऑफिस ज्वाइन किया था तब वो ही मेरी कंपनी का मैनेजिंग हेड था.

मुझे इस बात की बहुत खुशी होती थी कि, मेरी गर्लफ्रेंड मेरी क्लास की सबसे खूबसूरत लड़की थी, जिस पर मेरे और अगल-बगल वाले डिपार्टमेंट की आधे से ज्यादा लडके फ़िदा थे.

Free ebook from www.advaikmalik.com

पुलिस का ऑफिस आना

उस दिन भी ऑफिस सामान्य ही चल रहा था.

मैं और दीप्ति अपने स्वीट पर थे, बाहर ऑफिस का काम चल रहा था. हम रोज की तरह उस दिन भी सुबह 11 बजे उठे थे, जो सुबह चार-पांच बजे सोने वालों के लिए बहुत नार्मल बात होती है.

पूनम दीदी ब्रेकफास्ट ले कर आती है और मैं शुरू हो जाता हूँ उसे निपटाने में.

"दीप्ति जल्दी आओ नहीं तो खत्म हो जाएगा" मैं थोड़ा जोर से बोलता हूँ और उसकी तरफ देखता हूँ.

दीप्ति एकटक सीसीटीवी स्क्रीन की तरफ देख रही थी और सहमी आवाज में कहती है, "बाहर पुलिस आई है".

अब बड़ी दुविधा थी, आधा ब्रेड मुँह में था, और आधा हाथ में, तो मैं जैसे-तैसे ब्रेड खाते हुए उठ कर सीसीटीवी स्क्रीन की तरफ गया और बोला "भाईसाहब, ये क्या मामला है, कहीं ससुर जी ने तो नहीं भेजवाया है इन्हें" मैंने मजाक उड़ाते हुए दीप्ति से कहा.

"तुम्हे ऐसी सिचुएशन में भी मजाक सूझ रहा है, चलो नीचे देखते हैं क्या हुआ" दीप्ति ऐसा कहते हुए मुझे दरवाजे की तरफ खीचती है.

Free ebook from www.advaikmalik.com

हम दोनों बाहर रिसेप्शन पर पहुँचते हैं. पुलिस ऑफिसर को देख कर मैं उन्हें तुरंत "नमस्ते सर", बोलता हूँ.

वो भी मुझसे हाथ मिलाते हुए कहते हैं, "हैलो, मिस्टर देव, मैं ऐजान सिद्दकी, टीआई सिविल लाइन, क्या हम कुछ बात कर सकते हैं."

"जी बिल्कुल सर आइये", ऐसा बोलकर मैं और दीप्ति उन्हें सीईओ के कैबिन की तरफ ले जाते हैं.

रास्ते में सभी स्टाफ पुलिस को हमारे साथ देख कर चौंक जाते हैं, ऑफिस में एक से एक बात शुरू हो जाती है कि, आखिर पुलिस क्यों आई होगी?

हम सीईओ के कैबिन के पास पहुँचते हैं. केबिन के बाहर सीईओ के बोर्ड के ऊपर "दीप्ति गोयल" लिखा देख कर टीआई कहते हैं, "दीप्ति गोयल? नीचे तो रिसेप्शन में मैडम बोल रही थी कि, हमारे बॉस का नाम, देव वशिष्ठ है"

मैं दीप्ति की तरफ इशारा करके बोलता हूँ कि, "दीप्ति, मैडम का नाम है, वही पूरा बिजनेस संभालती हैं, मैंने तो बस इसको चालू किया था."

"वाह, महिला सशक्तिकरण, ये तो बहुत अच्छी बात है" मुस्कुराते हुए टीआई कहते हैं.

हम कैबिन में अन्दर जाते हैं, दीप्ति अपनी जगह में बैठ जाती है, टीआई और मैं उसके सामने बैठ जाते हैं.

"अच्छा प्लीज बताइए सर, हम क्या मदद कर सकते हैं?" मैं उनसे पूछता हूँ?

टीआई थोड़ा सीरियस हो कर बोलते हैं कि, "मिस्टर देव, असल में एसडीएम साहब की बुवा जी भी यहीं, आप लोगों की कॉलोनी

Free ebook from www.advaikmalik.com

में रहती हैं, आज सुबह मोर्निंग वाक के टाइम, दो बाइक सवार लोगों ने आपके ऑफिस के बाहर ही रोड में उनसे चैन स्नैचिंग की है, हमें रिपोर्ट की गई है और एसडीएम साहब का फोन भी आया है, केस को पर्सनली देखने, बस उसी सिलसिले पर आप लोगों के ऑफिस के जो कैमरे बाहर की तरफ हैं, उनका सीसीटीवी फुटेज देखना चाह रहा था"

"लगभग कितने बजे की बात होगी सर?" मैं उनसे पूछता हूँ.

वो उत्तर देते हैं, "यही करीब सुबह 6 से 7 बजे के बीच"

दीप्ति कंप्यूटर में तुरंत सुबह 6 बजे का फुटेज लगा कर स्क्रीन टीआई सर की तरफ कर देती है, और उन्हें माउस दे कर कहती है, कि, "सर आप प्लीज फूटेज देख लीजिये."

घड़ी के कांटे घुमते जाते हैं, आधे से एक घंटे तक सीसीटीव फूटेज आगे-पीछे करने के बाद उन्हें फाइनली सीसीटीवी फुटेज पर चैन स्नैचिंग होते दिख जाता है. कैमरे में उन लड़कों की फोटो तो नहीं आई होती है पर घटना रिकॉर्ड हुई होती है.

"क्या मुझे आप एक पेनड्राइव दे सकते हैं" टीआई मुझसे पूछते हैं.

"जी बिल्कुल सर" मैं उत्तर देता हूँ.

दीप्ति मुझे घूरते हुए दराज से पेनड्राइव निकाल कर टीआई को दे देती है.

टीआई उसमे फुटेज कॉपी करके हमें कहते है कि, "आप दोनों का बहुत-बहुत शुक्रिया, चलिए फिर कभी आप लोगों को भी पुलिस से कुछ काम रहे तो बताइयेगा." वो मुस्कारते हैं.

इस पर मैं भी कहता हूँ, "बिल्कुल सर, कुछ भी रहा तो हम आप ही को परेशान करेंगे."

Free ebook from www.advaikmalik.com

ऐसा कहते हुए मैं बगल शेल्फ से एक क्राइम फिक्शन नॉवेल उठा कर उन्हें देते हुए कहता हूँ, "हमारी तरफ से एक स्मॉल गिफ्ट सर."

"अच्छा दीप्ति मैं सर को बाहर तक छोड़ कर आता हूँ" ऐसा कहकर मैं टीआई सर को बाहर छोड़ने चला जाता हूँ.

उन्हें छोड़ कर मैं जब केबिन में वापस आता हूँ तो दीप्ति कहती है, 600 की पेनड्राइव 200 की किताब सुबह-सुबह 800 का नुकसान और वह भी मिस्टर देव के कारण"

मैं हस्ते हुए कहता हूँ "वन्स अ बनिया, ऑलवेज बनिया"

दीप्ति कहती है, "नहीं, वन्स अ बिजनेस, ऑलवेज बिजनेस, और तुम, तुम तो स्वीट में चलो वहाँ तुम्हे बताती हूँ, कौन बनिया और कौन पंडित"

"अच्छा तुम स्वीट में जाओ, मैं डिपार्टमेंट हेड को बुलाकर एक ब्रीफिंग कर देती हूँ कि, पुलिस क्यों आई थी, ताकि वो लोग सभी स्टाफों को बता दें और लोग रयूमर और गॉसिप छोड़ कर अपने काम पर फोकस हो सकें". दीप्ति मुझे कहती है.

मैं स्वीट में चला जाता हूँ, और बैड के सीराहने तकिया लगा कर बैठ यही सब पुलिस, क्राइम वगेरा के बारे में सोचने लगता हूँ.

थोड़ी देर बाद दीप्ति अन्दर आती है और स्टडी में बैठ कर लैपटॉप में ऑफिस का काम करने लगती है.

मैं दीप्ति से कहता हूँ, "यार, मैं तो अभी तक ये टीवी में क्राइम फाइल्स में ही देखता था कि, कुछ भी अपराध होने के बाद पुलिस को सिर्फ दो चीज सूझती हैं एक कॉल रिकॉर्ड-लोकेशन और दूसरा सीसीटीवी फुटेज और आज रियल लाइफ में भी देख

Free ebook from www.advaikmalik.com

लिया, सोचिये पुलिस सीधे ऑफिस आ गई, मेरा तो दिमाग ही खराब हो गया था टीआई को देख कर."

"तब ही तुम्हे मजाक सूझ रहा था", दीप्ति कहती है.

"नहीं यार वो तो मैं आप टेंशन में थी तो मैं आपको चिल करने के लिए कह दिया था, बाकि मेरी तो फट ही गई थी" मैं कहता हूँ.

"क्या फट गई थी" दीप्ति हस्ते हुए कहती है.

"कुछ नहीं" मैं कहता हूँ.

"अरे मेरे साइंटिस्ट, एसडीएम की बुआ थी इसीलिए इतने एक्टिव थे, नहीं तो ये लोग, कंप्लेंट ही लिख लेते वो बहुत बड़ी बात हो जाती" दीप्ति कहती है.

Free ebook from www.advaikmalik.com

सिटी मॉनिटरिंग सिस्टम की सोच

पुलिस का ऑफिस में आना, स्टाफ का उस पर अजीब रिएक्शन, दीप्ति का ये कहना कि, अगर एसडीएम की बुआ नहीं होती तो इतना भी नहीं होता, ये सब मुझे बहुत डिस्टर्ब कर जाता है.

अगले दिन अखबार में मेरा सीधा ध्यान दो न्यूज़ में जाता है, एक न्यूज़ में शहर के एक घर में चोरी हुई होती है और दूसरी न्यूज़ में कॉलेज की लड़कियों के साथ कुछ ईव-टीसिंग की न्यूज़ होती है.

मैं सोचता हूँ कि, अगर पूरे शहर की हर गली-सड़क और पब्लिक प्लेस में सीसीटीवी कैमरे लगा कर निगरानी शुरू कर दिया जाए तो आराम से क्राइम को रोका जा सकता है.

शहर के नागरिकों का पूरा डाटा तो नगर निगम के पास वैसे ही रहता है और जो लोग शहर में बाहर से आ रहे हैं उनका डाटा रख कर शहर को जीरो क्राइम एरिया बनाना तो बहुत आसान है.

मैं अपने लैपटॉप में जा कर इस बारे में और रिसर्च करता हूँ उसके बाद दीप्ति के पास जा कर एक कॉपी और पेन ले कर उसको समझाने लगता हूँ, मैं कॉपी में एक गोला बनाता हूँ और कहता हूँ कि, "देखो दीप्ति ये हमारा शहर है"

वो कहती हैं "नहीं, ये गोला है, और वो भी तिरछा बना है"

मैं कहता हूँ, "दीप्ति मजाक नहीं प्लीज, आईडिया सुनो"

Free ebook from www.advaikmalik.com

"अच्छा मेरा कुत्ता कुत्ता, और तुम्हारा कुत्ता टॉमी", दीप्ति मुझे घूरते हुए कहती है.

मैं नाराज हो कर कहता हूँ, "ठीक नहीं बताता".

"अले..ले..ले... मेरा बाबू नाराज हो गया" वो कहती है.

मैं और गुस्से से देखता हूँ.

"अच्छा, अच्छा, ठीक ठीक, अब नहीं करुँगी, प्लीज बताओ, अब पक्का ध्यान से सुनूंगी", वो कहती है.

मैं उसे बोलता हूँ कि, " हमारे शहर की पापुलेशन ढाई लाख है और इसमें करीब 200 मोहल्ले हैं."

"हूँ. शायद" दीप्ति सर हिलाते हुए कहती है.

"अब देखो अगर हर मोहल्ले में 50 कैमरे लगाए जाएं और हर कैमरे को लगाने का खर्चा 2000 रुपये भी आए तो 2 करोड़ रुपये ही होते हैं." ऐसा बोलते हुए मैं कॉपी में 200 x 50 x 2000 = 2 करोड़ रुपये लिखता हूँ"

"और ये दो करोड़ तुम दोगे, बाबू तुम औकाद भूल रहे हो, हमारी कंपनी का एनुवल टर्नओवर दो करोड़ है, प्रॉफिट 25-35 लाख ही होता है और वो भी तुम कंपनी एक्सपेंशन में लगवा देते हो" दीप्ति मुझे घूरते हुए कहती है.

"नहीं, नहीं भई, मैं कहाँ से दूँगा, तुमने स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के बारे में सुना है?" मैं पूछता हूँ.

"वो, मेरा निवासपुर - स्मार्ट सिटी, का बोर्ड, जो चौक-चौराहों पर लगा है, देखा है न, उसका क्या?"

"दीप्ति, वो स्मार्ट सिटी केंद्र सरकार का प्रोजेक्ट है, उसका बजट चार हजार करोड़ का है और वो प्रोजेक्ट नगर निगम के अन्दर

Free ebook from www.advaikmalik.com

है, मैं सोच रहा हूँ की आर्यन को बुला कर इस बारे में बात करूँ" मैं कहता हूँ.

"आर्यन, वो ही तुम्हारा नल्ला दोस्त, जो घर से भाग गया था, जिसके कौन पता नहीं ताऊ या फूफा हमारे शहर के मेयर हैं, मैं बता रही हूँ, ये सब टाइम वेस्ट मत करो, चार साल से एक्सपेंशन-एक्सपेंशन कह कर तुमने कोई भी सेविंग नहीं करी है, तुम्हे कुछ लगता भी है कि, मैं घर में क्या बोलुंगी, अगले साल हमे शादी का प्लान करना है, उस पर फोकस हो, ये सब क्या लगा रखे हो?" दीप्ति मुझसे बहुत सीरियस हो कर ऐसा बोलती है.

"नहीं यार, बस मैं सिटी मॉनिटरिंग सिस्टम" मैं बोल ही रहा था कि दीप्ति बीच में ही मुझे रोक कर बोलने लगती है..

"ओ..... सिटी मॉनिटरिंग सिस्टम, साहब ने अपने प्रोजेक्ट का हाई टेक नाम भी सोच लिया"

"नहीं यार, वो नाम तो इसलिए की मेयर और निगम में कुछ तो बताना पड़ेगा. मैंने इन्टरनेट में चेक किया है, बहुत सी यूरोपियन देशों में ऐसा ही सिस्टम है" मैं उत्तर देता हूँ.

"ठीक है, जो करना है करो, लेकिन मैं बता रही हूँ, सेविंग और शादी के लिए सीरियस हो जाओ, नहीं तो दूसरी बंदी खोज लो."

"तुम्हारे अलावा तो मुझे अनन्या पाण्डेय ही सूट करेगी, और वो तो मेरी औकाद के बाहर है, तो मैथमेटिकली तुम्हारे अलावा मेरे पास कोई बैटर ऑप्शन नहीं है, इसलिए डोन्ट, वरी, बेबी, आई विल टेक केयर" मैं उसे चिढ़ाते हुए कहता हूँ.

"बेटा, अगर मैं चली गई न, तो ये सब जो मैंने बनाया है न वो ले कर चल दूंगी, याद रखना" वो गुस्से में कहती है.

Free ebook from www.advaikmalik.com

"कहाँ का डिस्कशन कहाँ ले जाती हो यार, मैं जा रहा हूँ आर्यन को कॉल करने" ऐसा कह कर मैं आर्यन को कॉल करता हूँ.

"हेल्लो, सर, कैसे है आप, इस नाचीज को कैसे याद किया" आर्यन फोन उठाते साथ ही बोलता है.

"अच्छा हूँ भाई, आप कहाँ हो?" मैं पूछता हूँ.

"सर, आपको तो पता ही है, उस दिन पापा के मनाने और आपके समझाने के बाद मैं घर वापस चल दिया था. आज कल कारोबा में हूँ, पापा के कोयले के काम को मैनेज कर रहा हूँ, लेकिन सच बता रहा हूँ सर, जो मजा आपके ऑफिस में दो महीने काम कर के आया, वो यहाँ नहीं है." आर्यन कहता है.

"भाई, मुझे तो आज भी विश्वास नहीं होता की हमारे शहर के मेयर मनोज राय जी का सगा भतीजा, इतने बड़े कांट्रेक्टर विशाल राय जी का बेटा, दो महीने से हमारे ऑफिस में काम कर रहा था, और मुझे हवा नहीं थी." मैं कहता हूँ.

आर्यन कहता है, "नहीं सर, उस समय मैं घर से भाग गया था, उस टाइम मैं सिर्फ एक कॉलेज पास आउट था, और आपने मुझे जॉब दी थी, मैं ये कभी नहीं भूल सकता"

"अच्छा सर बताइए, इतने दिन बाद आपने कैसे फ़ोन किया" आर्यन पूछता है. "भाई, असल में आपके बड़े पापा से मुझे काम था, तो आप जब भी निवासपुर आओ, प्लीज मुझे उनसे मिलवा देना" मैं कहता हूँ.

आर्यन जवाब देता है कि, "क्या बोल रहे हैं सर, मैं कल ही आ जाता हूँ , सबसे पहले आपका काम".

"ठीक है भाई, फिर कल मिलते हैं" ऐसा बोल कर मैं फोन रख देता हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

मेयर से मीटिंग और फिर केवल वेटिंग

अगले दिन,सुबह मैं सो रहा था, तब ही आर्यन का कॉल आता है, "सर, बाहर आइये, आपका भाई आ गया."

मैं ऑफिस के गेट के पास जाता हूँ, और मेरे सामने वाइट कलर की भैया जी वाली सफारी आ कर रुकती है, और उसमे से सफ़ेद कुर्ता और जींस पहले, तिलक लगाए, उतरते हैं, भारतीय कमल पार्टी पार्टी के युवा नेता, आर्यन राय जी.

उसका उस दिन का एटीट्यूड, कपड़े, गाडी में जिला महामंत्री युवा मोर्चा का बोर्ड, चाल, सब अलग ही हो गए थे.

छः महीने पहले जो लड़का मेरे यहाँ काम करता था वो और जो मेरे सामने खड़ा था, दोनों में कोई समानता नहीं थी.

"भाई, ये सब क्या है, आप तो नेता बन गए" मैंने कहा.

"नहीं सर, वो पापा लोग अंजली के लिए मान गए, तो मैं पापा लोगो की राजनीती की बात मान गया, अब सब जगह का ड्रेस कोड और सिस्टम होता है, तो बस ये वही है" आर्यन कहता है.

"अच्छा, चलो अन्दर आओ" मैं आर्यन को ऊपर लाता हूँ, और हम ऑफिस के कांफ्रेंस रूम में बैठ जाते हैं.

"मैडम जी कहाँ है सर और आप शादी कब कर रहे हो?" आर्यन पूछता है.

"वो अपने केबिन में होगी, मैं बुलाता हूँ."

Free ebook from www.advaikmalik.com

"नहीं, सर, मैडम से बाद में मिल लेंगे, पहले आप बताइए, क्या बात है, ताऊ जी से क्या काम है? आर्यन पूछता है.

मैं आर्यन को सिटी मॉनिटरिंग सिस्टम के अपने आइडिया के बारे में डिटेल से बताता हूँ और पूछता हूँ कि, "तो स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट तो निगम के ही अन्दर है, क्या आपके ताऊ जी इस प्रोजेक्ट में सिटी मॉनिटरिंग सिस्टम को जुड़वा सकते हैं.?"

आर्यन कुछ देर सोचता है और फिर बोलता है, "सर, आइडिया तो एक नम्बर है, पर ताऊ जी, उनका कुछ कहा नहीं जा सकता, एक काम करते हैं शाम को उनसे मिलने चलते हैं, देखते हैं, वो आखिर क्या बोलते हैं, कुछ न कुछ तो बोलेंगे ही."

मैं खुश हो कर आर्यन से बोलता हूँ कि, "ठीक है भाई मैं एक नम्बर पीपीटी तैयार करता हूँ, मेयर सर के लिए".

इस पर आर्यन जोर-जोर से हसने लगता है और बोलता है, "ताऊ जी और पीपीटी, वो पीपीटी मतलब टीवी समझते हैं, आप एक फाइल बनाइये, वो भी हिंदी में, वो भी एकदम शोर्ट कट, पहले ताऊ को समझाएँगे, और उसके बाद वो फाइल उन्हें चिपका देंगे".

"अच्छा सर फिर दो तीन घटे बाद मिलते हैं, तब तक मैं चला, अंजलीSSSS, मेरी अंजलीSSSS, से मिलने" वो गाना गाते हुए, चल देता है.

मैं फाइल तैयार करता हूँ और आर्यन का इन्तेजार करने लगता हूँ. वो करीब 3 बजे वापस आता है और फिर हम दोनों निगम कार्यालय पहुच जाते हैं, मनोज राय जी से मिलने.

मेयर के केबिन के बाहर वेटिंग में बैठे बहुत लोग अपनी बारी का इन्तेजार कर रहे थे. आर्यन सीधे दरवाजा खोल कर अन्दर

Free ebook from www.advaikmalik.com

घुस जाता है और मुझे कहता है, "आइये न सर, बाहर क्या कर रहे हैं"

मैं एक तरफ वेटिंग रूम में बैठे लोगों को देखता हूँ और दूसरी तरफ आर्यन को, जो मुझे हाथ हिला कर अन्दर बुला रहा था.

अजीब से उधेड़बुन थी, पर अन्दर तो जाना ही था, तो मैं चल देता हूँ.

"और ताऊ जी", बोलकर आर्यन उनका पैर छूता हैं. आर्यन को पैर छूता देख मैं भी पैर छूता हूँ.

मनोज राय जी हमें बैठने बोलते हैं और कहते हैं "तो बताओ आर्यन, क्या प्रोजेक्ट बताने वाले हो आप लोग"

"देव सर आपको एक ऐसा प्रोजेक्ट बताएँगे कि, अगर वो आपने लागू करवा दिया तो शहर की समझो आधी से ज्यादा समस्या ही हल हो जाएगी" आर्यन कहता है.

इस पर मनोज राय जी मुस्कुराते हुए मेरी तरफ देख कर कहते हैं "बताइए देव सर, क्या ऐसा प्रोजेक्ट है, जिससे शहर की आधी समस्या हल हो जाएगी".

"जी सर" बोल कर मैं उनके सामने फाइल रखता हूँ, और उसका पहला पेज खोलता हूँ, जिसमे नेशनल पापुलेशन सर्वे की रिपोर्ट और शहर का नक्शा था, उस पेज को दिखाते हुए मैं कहता हूँ कि, "सर हमारे शहर की जन संख्या करीब ढाई लाख है और करीब 200 मोहल्ले हैं"

इसके बाद मैं फाइल का दूसरा पन्ना पलटते हुए जिसमे सीसीटीवी कैमरों के रेट की जानकारी और कुल खर्च का अनुमान लिखा था कहता हूँ कि, "सर अगर हम हर मोहल्ले में 50 सीसीटीवी कैमरे लगाएं और हर कमरे का खर्च 2000 रुपये

Free ebook from www.advaikmalik.com

भी आए तो शहर को सुरक्षित करने के लिए हमें सिर्फ दो करोड़ रूपए लगेंगे”

फाइल का तीसरा पन्ना जिसमे स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के फण्ड की जानकारी थी, उसे दिखाते हे मैं कहता हूँ कि, “स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट में हमारे पास चार हजार करोड़ का फंड पहले से है, आप अगर सिटी मॉनिटरिंग सिस्टम को भी इसमें जोड़ दें तो यह आसानी से हो जाएगा.” ऐसा कह कर मैं चुप हो जाता हूँ.

तुरंत आर्यन जोश भरी आवाज में बोलता है कि, “ताऊ एक नम्बर आइडिया है, आपका फुल नाम हो जाएगा, हमने पता किया है, युरोपे में भी ऐसा ही होता है, आप एकदम फेमस हो जाओगे, इसको करा दो.”

मनोज राय जी कहते हैं, “हाँ, आईडिया तो सही है, देखता हूँ मैं क्या हो सकता है, शायद सीएम से भी बात करनी पड़े, बताता हूँ, मैं जो भी होता है”

“थैंक्यू सर” ऐसा कहते हुए मैं कुर्सी से उठता हूँ.

“चलते हैं ताऊ जी” आर्यन कहता है.

और हम दोनों मेयर के केबिन से बाहर आ जाते हैं.’

आर्यन मुझे ऑफिस ड्राप करता है, “ठीक सर, ताऊ जी को मैं उंगली करता रहूँगा, जैसे ही कुछ होता है, आपको अपडेट करता हूँ. ख्याल रखियेगा, दोबारा आता हूँ, तो मैडम से भी मिलवाना” आर्यन ऐसा कह कर मुझे बाय करता है और चल देता है.

मैं ऊपर स्वीट में जाता हूँ, जहाँ दीप्ति बैठी थी, मेरे पहुचते ही साथ वो कहती है, “आ गए तीर मार कर, अब फ्री हो गए हो तो जाइये, प्रिंटिंग प्लांट में ब्रेक डाउन है देखिये, कैसे बनवाना है”

Free ebook from www.advaikmalik.com

"ओके", बोल कर मैं प्रिंटिंग प्लांट में जाता हूँ, जहाँ स्टाफ लोग मशीन बनवा रहे थे.

"आप लोग जब बनवा ही रहे थे तो मुझे क्यों बुलवाया" मैं स्टाफ लोगों से पूछता हूँ.

"आपका आशीर्वाद लेने सर" उनमे से एक स्टाफ उत्तर देता है.

कुछ दिन बाद मैं आर्यन को दोबारा फोन करता हूँ,

"भाई, मेयर सर ने कुछ बताया" मैं पूछता हूँ.

"सर, दो मिनट दीजिये, ताऊ जी से पूछ कर आपको कॉलबैक करता." आर्यन कहता है.

थोड़ी देर बाद उसका कॉल आता है, "सर वो ताऊ जी कह रहे थे कि, ऐसे पुरे शहर से रिलेटेड फैसला सीएम से पूछ कर होता है, तो उन्होंने फाइल को सीएम को भेजा है, कुछ दिन में ऊपर से उत्तर आ जाएगा."

करीब एक हफ्ता बाद मैं दोबारा आर्यन को कॉल करता हूँ.

आर्यन फोन उठाते ही, "हाँ सर, मेरी ताऊ जी से कल ही बात हुई थी, उन्हें सीएम के ऑफिस से रिप्लाई आया हैं, उन्होंने बताया है कि, स्मार्ट सिटी का प्रोजेक्ट सेन्ट्रल गवर्नमेंट का है, तो सीएम ऑफिस वो फाइल, राजधानी भेज दिए हैं. वहाँ से कुछ रिप्लाई आएगा तो फिर आगे कुछ होगा."

देखते देखते पंद्रह दिन बीत जाते हैं. मैं आर्यन को मेसेज करता हूँ. "भाई कुछ हुआ क्या"

रिप्लाई आता है, "नो सर ☹"

Free ebook from www.advaikmalik.com

आईडिया का शहर में वायरल होना

जब आर्यन के साइड से कोई रिप्लाई नहीं आता तो, मैं इस आइडिया को भूल कर ऑफिस के काम में लग जाता हूँ.

लेकिन एक दिन मेरा ध्यान जाता है कि, हम फ्रेंडबुक, फोटोग्राम और व्यूट्यूब में हमारी कंपनी की किताबों का विज्ञापन चलाते हैं, ऐसा ही विज्ञापन हम सिटी मॉनिटरिंग सिस्टम का भी चला सकते हैं.

मैं तुरंत हमारी कंपनी के बुक प्रोमोशन डिपार्टमेंट की हेड संगीता के पास जाता हूँ, और उससे पूछता हूँ. "संगीता, चेक करो, निवासपुर के कितने लोग फ्रेंडबुक, फोटोग्राम और व्यूट्यूब में हैं और हमें विज्ञापन का कितना रेट लगेगा. मैं कांफ्रेंस रूम में हूँ, मुझे डिटेल्स ले कर आओ"

संगीता एक नोटपैड ले कर थोड़ी देर बाद कांफ्रेंस रूम में आती है, "सर, निवासपुर में एक लाख चालीस हजार लोग फ्रेंडबुक और फोटोग्राम में है और एक लाख नब्बे हजार लोग व्यूट्यूब देखते हैं."

"दैट्स ग्रेट, एक काम करो, अनिमेशन डेस्क से मनीष को भेज दो"

"जी सर" संगीता चली जाती है.

"मे आई कमइन सर?" मनीष कांफ्रेंस रूम के दरवाजे को थोड़ा सा खोल कर पूछता है.

Free ebook from www.advaikmalik.com

"हाँ, मनीष आओ, एक दो-तीन मिनट का अनिमेशन विडियो बनाना है." मैं कहता हूँ.

मनीष पूछता है, "किस बारे में सर, कोई नई किताब का प्रोमो तैयार करना है?"

"नहीं, यार, एक पर्सनल प्रोजेक्ट है, सुनो", बोलकर मैं उसे सिटी मॉनिटरिंग सिस्टम के बारे में पूरा बताता हूँ, और ये भी की मेयर सर के साथ बैठक और उसके बाद क्या हुआ.

मनीष कहता है, "सर ये सब दल्ले हैं, जनता का हित कौन चाहता है, गैर कानूनी दारू, कंस्ट्रक्शन, रेत चोरी, और ये सब उलटे-सीधे काम सब ये नेता, अधिकारी और उनके करीबी लोग ही करते हैं, ये टुच्चे छाप नेता रोज रात को या तो ठेके और बार में मिलते हैं या रेड लाइट एरिया में और आप, किस मंत्री के बंगले में कौन रात को आ रहा है, और कब जा रहा है, आप कह रहे हो ये सब को सीसीटीवी में रिकॉर्ड करेंगे, पॉसिबल ही नहीं है सर"

उसकी ये सब बात सुनने के बाद मैं कहता हूँ, "तो फिर हम लोग क्या कर सकते हैं"

"सर, आप, आप खुद नेता बनो, कसम से मैं बता रहा हूँ, अगर मेरे पास आप जैसा पैसा होता तो मैं इन सब की फाड़ के रख देता." मनीष कहता है.

"मतलब?" मैं हैरानी से पूछता हूँ.

मनीष कहता है कि, "सर एक काम करते हैं, एक विडियो बनाते हैं, जिसमे आप लोगों को ये सिटी में कैमरे वाला आईडिया बताओ और उनसे पूछिए की उनका क्या विचार है,. कसम से बता रहा हूँ, विडियो तहलका मचा देगा"

Free ebook from www.advaikmalik.com

"ओके, लेट्स डू इट" मैं उत्तर देता हूँ.

"डन सर, तो चलिए मैडम के केबिन में, और करते हैं विडियो रिकॉर्ड." मनीष कहता है.

"नहीं, नहीं भाई, दीप्ति के केबिन में नहीं, उसे वैसे ही नहीं पसंद" मैं कहता हूँ.

मनीष कहता है "अच्छा सर, फिर मेरे एक दोस्त का स्टूडियो है, वहाँ रिकॉर्ड कर लेते हैं, एडिट मैं यहाँ कर लूँगा."

मैं और मनीष उसके दोस्त के स्टूडियो जाते हैं और विडियो रिकॉर्ड करके ले आते हैं. मनीष उसे एडिट करके फ्रेंडबुक, फोटोग्राम और व्यूट्यूब में डाल कर विज्ञापन स्टार्ट करवा देता है.

कुछ ही दिन में विडियो में 10 हजार व्यू आ जाते हैं, और मेरा फोन का चैटएप "आई सपोर्ट" के मेसेज से भर जाता है.

दीप्ति भी वो विडियो देख लेती है, और मुझे कहती है, "तो आप अब नेता बनना चाहते हो"

"नेता नहीं, दीप्ति, बस मेरा जो आइडिया है, उसे मैं लोगों तक पहुँचाना चाहता हूँ" मैं कहता हूँ.

"देखलो, इन सब चक्कर में कहीं आप मुझे न खो दो, ये बस याद रखना." दीप्ति सीरियस हो कर ऐसा बोल कर बाहर चली जाती है.

तब ही अचानक मेरे पास आर्यन का कॉल आता है, "हेलो सर, ये लीजिये, ताऊ जी आपसे बात करना चाहते हैं"

"हेलो, देव, बेटा, वो विडियो जो तुम डाले हो उससे जनता के बीच माहौल खराब हो रहा है, कुछ वकीलों का कहना है कि, ऐसे कैमरे लगाना जनता की प्राइवेसी का उलंघन हो जाएगा,

Free ebook from www.advaikmalik.com

और ऐसे आईडिया को प्रोमोट करना सही नहीं है, वैसे भी तब जब तुमने उस आइडिया को सरकार को दे रखा है”

“हेलो, हेलो, सर आपकी आवाज नहीं आ रही, हेलो” सब सुनने के बाद मैं ये बोल कर फोन काट देता हूँ.

धीरे-धीरे विडियो में और व्यू बढ़ते हैं, उसी के साथ लोगों के कमेन्ट और शेयर भी, दो अखबार वाले भी अपने सिटी एडिशन में इस टॉपिक पर जनता की राय का सर्वे छाप देते हैं.

और उसके बाद मुझे आता है एक और फोन.

Free ebook from www.advaikmalik.com

आम जनता पार्टी का नगर अध्यक्ष नियुक्त

मेरा फोन बजता है, फोनकॉलर एप में नाम लिखा आता है, बिलासपुर प्रभारी, एजेपी. दीप्ति ने ताना मारा था, मेयर से बात करके मेरा वैसे ही दिमाग खराब था और अब ये कॉल.

मैं इरिटेशन के साथ फोन उठाता हूँ सामने से आवाज आती है "हेलो, क्या मैं श्रीमान देव वशिष्ठ जी से बात कर सकता हूँ" कॉल में सामने से आवाज आती है.

"जी मैं श्रीमान देव वशिष्ठ जी ही बोल रहा हूँ" बताइए मैं इरिटेट साउंड में बोलता हूँ.

"बेटा, मैं शिवनाथ सिंधानी बोल रहा हूँ, आम जनता पार्टी का बिलासपुर प्रभारी, तुम्हारा विडियो देखा, क्या बोलते हो तुम, क्या आईडिया है तुम्हारा, क्या हम मिल सकते हैं"

श्रीमान से सीधा बेटा, मन तो किया बोल दूं "अंकल जी मन नहीं है", लेकिन फिर लोक-लाज को देखते हुए मैंने कहा, "जी सर, आपका पार्टी ऑफिस कहाँ है, बताइए मैं आ जाता हूँ."

"पार्टी ऑफिस नहीं बेटा, मैं खुद पार्टी के कुछ वरिष्ठ सदस्यों के साथ तुमसे मिलने आ जाता हूँ. अपना पता बताओ" वो कहते हैं.

"ठीक है सर, आपको चैटएप करता हूँ." ऐसा बोल कर मैं उन्हें अपना ऑफिस का एड्रेस भेज देता हूँ.

कुछ देर बाद मुझे रिसेप्शन से कॉल आता है, "सर आम जनता पार्टी के पदाधिकारी आपसे मिलने आए हैं"

Free ebook from www.advaikmalik.com

"ठीक है, उन्हें कांफ्रेंस रूम में भेज दो", मैं कहता हूँ.

कांफ्रेंस रूम में अन्दर आते ही मेरी तरफ हाथ मिलाने के लिए बढ़ा कर उनमे से एक शख्स बोलता है, "बधाई हो देव बेटा, मैं शिवनाथ सिंधानी, और इनसे मिलिए, ये हैं निवासपुर विधानसभा अध्यक्ष रेखा भंडारी जी, और ये हमारे जिला संगठन मंत्री, डीडी सेहगल, दिलदार सेहगल जी"

मैं सभी को नमस्ते करता हूँ, और दीप्ति को फोन करके बोलता हूँ "प्लीज पूनम जी से कांफ्रेंस रूम में चाय, नास्ता भेजवा दो".

"ओके" दीप्ति बोल कर फ़ोन काट देती है.

"इसकी क्या जरुरत है बेटा, बस तुमसे मिलने आए है" रेखा भंडारी जी बोलती हैं.

"नहीं मैडम, आप लोग पहली बार आए हैं, इतना तो जरुरी है, खैर बताइए, आप लोग मुझसे क्या चाहते हैं" मैं पूछता हूँ.

इस पर उनमे से सबमें बुजुर्ग, करीब 65-70 साल के सीनियर व्यक्ति, डीडी सेहगल जी कहते हैं, "देखो बेटा, तुम जानते ही हो, आम जनता पार्टी बनी ही इसलिए है, ताकि इस सिस्टम को सुधारा जा सके. हमने हमारे प्रदेश अध्यक्ष ही नहीं राष्ट्रिय अध्यक्ष तक को तुम्हारे बारे में बताया है. सभी का कहना है कि, तुम्हारे जैसे टैलेंटेड युवा को शहर का मेयर होना चाहिए. तो अगर तुम भी हमारे साथ आते हो तो हम सब मिल कर इस सिस्टम को सुधारेंगे." वो और बाकी सभी लोग मेरी तरफ देख रहे होते हैं.

"मेरा आइडिया इतना अच्छा लगा, तो जतिन गहरवाल जी, आपके राष्ट्रिय अध्यक्ष, जो राजधानी के मुख्यमंत्री भी हैं, वो वहाँ क्यों नहीं इसे लागू कर देते.?" मैं थोडा हार्श टोन में पूछता हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

"बेटा, राजधानी को पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं है, वहाँ कुछ भी करने के लिए केंद्र सरकार की अनुमति लगती है, और वहाँ तो वीरेंद्र योगी जी हैं, भाकपा है, लेकिन यहाँ ऐसा नहीं है, यहाँ का नगर निगम भी स्वतंत्र है और राज्य भी और तुम निवासपुर का मेयर बनने के बाद शहरहित में जो भी कदम चाहोगे ले सकोगे" शिवनाथ सिंधानी जी उत्तर देते हैं.

मुझे उनकी बातें कुछ-कुछ सही लग रही थी, सिवाए इसके कि, दीप्ति मेरी लंका लगाने वाली थी, ये सब उसको पता चलने पर.

पूनम जी सभी के लिए चाय, नास्ता ले कर आती हैं.

"प्लीज लीजिये" मैं कहता हूँ.

"देखो बेटा, जब तक तुम जैसे होनहार युवा राजनीति में नहीं आएँगे, सिस्टम नहीं बदलेगा" रेखा भंडारी जी कहती हैं.

मैं सर हिलाते हुए कहता हूँ, "जी मैडम, मैं समझ रहा हूँ, मैं सोच कर बताता हूँ"

चाय खत्म होने के बाद वो लोग जाने की तैयारी करते हैं, पर जाने से पहले मेरे साथ एक तस्वीर खीचने कहते हैं, मैं फोन करके मनीष को कांफ्रेंस रूम में बुलाता हूँ, और उसे हम सब की एक तस्वीर खीचने बोलता हूँ.

तस्वीर खीचवाने के बाद "फिर बताना बेटा" ऐसा बोल कर वो लोग चले जाते हैं.

उनके जाने के बाद मनीष मुझसे कहता है, "देखा सर, मैंने कहा था न नेता बनने, अब होने भी लगा है, वैसे क्या कह रहे थे ये लोग?"

"कुछ नहीं यार, बोल रहे थे मेयर कैंडिडेट बनाएँगे, पार्टी ज्वाइन करलो", मैं कहता हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

"तो सोच क्या रहे हैं सर, एकदम सही आप्शन है, लोग आम जनता पार्टी को जानते भी हैं, और आप जैसा बंदा अगर, आजपा में जाएगा, तो फिर तो आपको कोई नहीं रोक सकता, आप ही बनोगे निवासपुर के जतिन गहरवाल."

मनीष और आजपा वालों ने मुझमें हवा तो ठीक भरी थी लेकिन हवा निकलते देर नहीं लगी.

"अगर तुम ये सब चक्करों में पड़ोगे तो मुझे भूल जाना" दीप्ति की यह लाइन मेरे कानों तक पहुचती है और तकिया मेरे मुह पर.

"नहीं यार, एक बार सोचो, मैं नहीं कह रहा की मैं मेयर बनूँगा, पर इससे मेरा आइडिया पॉपुलर होगा, जो मैं चाहता हूँ " मैं कहता हूँ.

"और मुझे, मेरा क्या, मुझे तुम बिल्कुल नहीं चाहते, मुझे पता है, इस सबसे हमारे बिजनेस, हमारे रिलेशन इस सब में असर पड़ा तो, उसकी जिम्मेदारी कौन लेगा" दीप्ति कहती है.

"नहीं, यार, आई रियली लव यू, और तुम्हे ये पता है, मुझे बस कुछ दिन ये सब करने दो, अगर इसका कुछ भी नेगेटिव असर हमारे बिजनेस या रिलेशन में हुआ तो आप जब बोलोगी तब ये सब छोड़ दूंगा." मैं वादा करता हूँ.

"प्रॉमिस?" दीप्ति पूछती है.

"हाँ पक्का प्रॉमिस" मैं उत्तर देता हूँ.

"लेकिन याद रखना अगर किसी भी दिन इस सबका असर हमारे बिजनेस या रिलेशन पर पड़ा और तुमने मेरे कहने पर ये सब नहीं छोड़ा, तो मैं ही तुम्हे छोड़ कर चली जाउंगी" दीप्ति कहती है.

Free ebook from www.advaikmalik.com

“ठीक है मैं जा रही हूँ, काम करने, तुम भी देखलो कुछ क्या करना है” दीप्ति ऐसा कह कर अपने कैबिन में चली जाती है.

मैं शिवनाथ जी को फ़ोन करता हूँ और उन्हें कहता हूँ कि, मैं पार्टी ज्वाइन करने के लिए तैयार हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

अजीब प्रेस कांफ्रेंस

अगले दिन आजपा की तरफ से प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन होता है. मैं अपने कुछ ऑफिस के स्टाफ लोगों के साथ प्रेस क्लब पहुँचता हूँ.

"लीजिये, देव जी आ गए" शिवनाथ जी वहाँ खड़े बाकी लोगों से कहते हैं. सभी मुझसे हाथ मिलाने लगते हैं, कुछ मेरे साथ सेल्फी खीचने लगते हैं.

"आप तो स्टाल है, भैया जी" *(आप तो स्टार हैं भैया जी)*, थोड़े तोतलाते हुए एक 24-25 साल का लड़का मुझे बोलता है.

मैं तुरंत समझ जाता हूँ कि, वो स्टार बोल रहे हैं, और मैं उत्तर देता हूँ, "शुक्रिया भाई."

"ये हमारी पार्टी के युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष और सबसे मेहनती कार्यकर्त्ता, मिथलेश शुक्ला, ये प्रेस कांफ्रेंस का सारा काम भी इन्होने ने ही किया है." रेखा भंडारी जी परिचय कराते हुए कहती हैं.

"बधाई हो मिथलेश जी आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा" मैं उनसे हाथ मिलाते हुए कहता हूँ.

"चलिए प्रेस कांफ्रेंस बस शुरू होने वाली है, सभी बैठिये" शिवनाथ जी ऐसा बोलते हुए हम सभी को स्टेज पर बैठाते हैं. मुझे बीच में कुर्सी दी जाती है और थोड़ी देर में प्रेस कांफ्रेंस शुरू हो जाती है. सामने करीब 30-40 प्रेस और मीडिया वाले होते हैं.

Free ebook from www.advaikmalik.com

उसी संख्या में प्रेस वालों के पीछे पार्टी के कार्यकर्ता खड़े होते हैं.

शिवनाथ सिंधानी जी माइक अपनी तरफ खीचते हुए कहना शुरू करते हैं, "मेरे प्यारे मीडिया के साथियों, आप सभी ने वो विडियो तो देखा ही होगा, जिसमे देव वशिष्ठ जी बता रहे हैं कि, कैसे बस दो करोड़ रुपये में पूरे शहर को सुरक्षित और अपराध मुक्त बनाया जा सकता है, लेकिन ये बेशर्म निगम, जिनके पास एक हजार करोड़ का वार्षिक बजट है, चार हजार करोड़ का स्मार्ट सिटी का बजट हैं, उनके कान में जू तक नहीं रेंगती. ऐसे में हमारे देश के युवा, देश के नौजवान कहाँ जाएँगे, वो तो हताश हो जाएँगे, इसलिए हमारी पार्टी है, यही वो पार्टी है जो देश को बदलेगी, और बदलेंगे देव वशिष्ठ जी जैसे लोग. इसलिए देव वशिष्ठ जी ने आम जनता पार्टी ज्वाइन की है"

उनके ऐसा कहते ही, मीडिया वाले सवाल पूछने लगते हैं,

"मिस्टर वशिष्ठ, तो क्या अब आप चुनाव लड़ेंगे" एक प्रेस वाला पूछता है.

"जी बिल्कुल, ये हमारे शहर के नगर अध्यक्ष हैं, ये हमारे महापौर के चेहरे हैं और इनके ही नेत्रित्व में हम निवासपुर नगर निगम का चुनाव लड़ेंगे" शिवनाथ जी तुरंत उत्तर देते हैं.

"नगर निगम में आने के बाद आप क्या ऐसा करेंगे, जनता आपको क्यों चुनें", एक और प्रेस वाला सवाल पूछता है.

इससे पहले की फिर शिवनाथ जी सवाल का उत्तर देते, मैं माइक अपनी तरफ खींच कर उत्तर देता हूँ, "हम प्रॉपर्टी टैक्स और वाटर बिल फ्री कर देंगे"

Free ebook from www.advaikmalik.com

पूरे हॉल में सन्नाटा हो जाता है, पार्टी के भी सभी लोग हैरानी से मेरा मुँह देखने लगते हैं.

मैं आगे कहता हूँ, "लेडीज एंड जेंटलमेन, आप लोग इतना क्यों हैरान हैं, शहर में करीब तीस हजार घर हैं, हर घर से सालाना एवरेज में 12 हजार प्रॉपर्टी टैक्स लिया जाता है, इसी तरह एवरेज में हर घर से वाटर बिल मंथली 500 है, दोनों को जोड़ कर साल भर का लगभग 54 करोड़ ही होता है, अभी अभी शिवनाथ जी ने बोला की निगम का वार्षिक बजट 1000 करोड़ है, तो हम उसमे से 54 करोड़ छोड़ देंगे, सिंपल".

प्रेस कांफ्रेंस हॉल में सभी लोग एक दूसरे का चेहरा देखने लगते हैं.

"अच्छा फिर ठीक है, शेष जानकारियाँ हम लोग आप तक पहुंचाते रहेंगे, ये प्रेस कांफ्रेंस अब पूर्ण होती है", शिवनाथ जी ऐसा बोलते हुए हम सभी के साथ प्रेस कांफ्रेंस हॉल से बाहर आ जाते हैं .

मैं प्रेस कांफ्रेंस से सीधा अपने ऑफिस पहुँचता हूँ, पीछे-पीछे सभी पार्टी के लोग भी आ जाते हैं. ऑफिस में करीब 35-40 लोगों की अचानक भीड़ हो जाती है.

अब कांफ्रेंस रूम में सिर्फ 10-12 कुर्सियां थी, तो जो जहाँ पा रहा था, वहाँ खड़ा था, जिन्हें कुर्सी मिली थी, वो सभी पार्टी के सीनियर थे.

तब ही दीप्ति वहाँ आती है, और दरवाजा खोलने की कोशिश करती है, दरवाजे तक लोग सट-सट के खड़े थे, तो दरवाजा पूरा नहीं खुलता है, मेरी आँखे उससे मिलती हैं, और मुझे ऐसा लगता है, जैसे वो मुझे कह रही हो कि, "तो आखिर तुमने ऑफिस को अपना पार्टी ऑफिस बना दिया, बधाई हो"

Free ebook from www.advaikmalik.com

"मैं आ रही हूँ, ऐसा कह कर वो चली जाती है.

"सर, पार्टी ऑफिस कहाँ है?" मैं शिवनाथ जी की तरफ देख कर पूछता हूँ.

शिवनाथ जी थोड़ी गंभीर आवाज में कहते हैं, "देव जी, पार्टी ऑफिस पहले मॉल के सामने था, लेकिन पिछले चुनाव के बाद जिन प्रमुख नेताओं ने पार्टी से चुनाव लड़ा था उन्होंने पार्टी छोड़ दी, कार्यालय भी वही लोग चलाते थे, तो वो भी बंद हो गया."

"अच्छा तो पार्टी का ऑफिस भी नहीं है" मैं बोलता हूँ.

"जी, अभी तो नहीं है." रेखा भंडारी जी कहती है.

"वैल, ठीक है, मैं कुछ करता हूँ." ऐसा बोल कर मैं कुर्सी से खड़े हो कर हाथ जोड़ता हूँ.

सभी लोग खड़े हो जाते हैं.

"ठीक, देव जी, फिर मिलते हैं, जय हिन्द" शिवनाथ सिंधानी जी बोलते हैं.

बाकि सभी लोग भी मुझे "जय हिन्द, सर", "जय हिन्द भैया" बोलते हुए कमरे से चले जाते हैं.

उनके जाने के बाद मैं मनीष के पास जाता हूँ, "मनीष भाई, एक शॉप पता करिए कचहरी चौक के आस-पास" मैं मनीष से बोलता हूँ.

"जी सर, कुछ नया काम या क्या पर्पस से" मनीष पूछता है.

"भाई, आजपा वालों का पार्टी कार्यालय तक नहीं है, अब शहर में इतना बड़ा कार्यक्रम का प्रेस से वादा किये हैं, चुनाव प्रचार करेंगे, रोज लोग मिलने आएँगे, सब यही तो आ नहीं सकते, और

Free ebook from www.advaikmalik.com

अगर आए, तो तुम्हे पता ही है, आप लोगों की दीप्ति मैडम मेरा क्या हाल करेंगी" मैं मनीष की तरफ देखते हुए बोलता हूँ.

मनीष उत्तर देता है, "जी सर मैं सब अरेंज करता हूँ."

Free ebook from www.advaikmalik.com

शहर में हाई टेक चुनाव प्रचार शुरू

अगले दिन सभी अख़बारों के सिटी एडिशन के कवर पेज में आजपा की प्रेस कांफ्रेंस की ही न्यूज़ होती है. "शहर हो जाएगा क्राइम फ्री", "नहीं देना पड़ेगा प्रॉपर्टी टैक्स और वाटर बिल" जैसे हैडिंग सभी न्यूज़ पेपर में होते हैं.

मैं टीवी चालू करता हूँ, उसमे भी लोकल न्यूज़ चैनल में प्रेस कांफ्रेंस का ही जिक्र हो रहा होता है. मेरे फ़ोन में सोशल मीडिया के 400-500 नोटीफिकेशन होते हैं, शहर के सैकड़ों लोग मुझसे मिलने के लिए और मेरा मोबाइल नंबर मांगने मेसेज कर रहे होते हैं.

ये सब वही हो रहा होता है, जिसका पूरा अनुमान मुझे प्रेस कांफ्रेंस में हो चुका था.

तभी मुझे मनीष का फोन आता है, "सर आ जाइये, कचहरी चौक में जतन लस्सी के पास पार्टी ऑफिस खुल रहा है, पार्टी के सब लोग भी आ गए हैं, बस आपका इन्तेजार है, रिब्बन काटने के लिए"

"वाह भाई, क्या बात है, एक दिन में ही पूरा", मैं ख़ुशी के साथ बोलता हूँ,

"हाँ सर, आ जाइये, जल्दी" मनीष कहता है.

"ठीक है भाई, मैं आ रहा हूँ". ऐसा बोल कर मैं फ़ोन रख देता हूँ और दीप्ति के केबिन में चला जाता हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

"दीप्ति, दीप्ति, चलो, आपको कहीं ले चलना है" मैं दीप्ति का हाथ अपनी तरफ खींचते हुए बोलता हूँ.

"कहाँ चलना है, बताओ तो कम से कम" वो पूछती हैं.

"नहीं, नहीं, आप बस चलो," मैं कहता हूँ.

मैं और दीप्ति कार से कचहरी चौक पहुँचते हैं, एक शॉप के सामने टोपी लगाए हुए काफी भीड़ लगी होती है, और शॉप के ऊपर बोर्ड लगाया जा रहा होता है "कार्यलय आम जनता पार्टी निवासपुर नगर" और बोर्ड के एक तरफ होती है, जतिन गहरवाल जी की फोटो और दूसरी तरफ मेरी.

जैसे ही मेरी और दीप्ति की नजर उस तरफ पड़ती है, हम दोनों एक दूसरे के तरफ देखते हैं, मुझे लगता है मानो, दीप्ति मुझे कह रही हो कि, "आखिर तुम नेता बन ही गए"

मैं कार पार्क करके उस शॉप के गेट के पास जाता हूँ, सभी मुझे "जय हिन्द भैया", "जय हिन्द सर" बोलने लगते हैं. रेखा जी, दिलदार जी, शिवनाथ जी, कुछ और नेताओं के साथ एकदम गेट के सामने खड़े होते हैं और गेट में लाल रिब्बन लगा होता है.

शिवनाथ जी थाली से कैंची उठाते हुए मेरी तरफ करते हैं और कहते हैं, "लीजिये, देव जी, पार्टी के नगर कार्यालय का उद्घाटन कीजिये"

मैं मुस्कुराते हुए कैंची लेता हूँ, दीप्ति मेरे बगल में ही लेकिन अलग खड़ी होती है, मेरा बहुत मन था, कि, वो मेरे साथ हाथ पकड़कर रिब्बन काटे, लेकिन प्रेस और इतने सारे पार्टी के लोगों के सामने न मैं उसे ये कह सकता था, न वो ये कर सकती थी.

Free ebook from www.advaikmalik.com

खैर, उद्घाटन हो जाता है, और सभी लोग ख़ुशी-ख़ुशी कार्यालय के अन्दर आते हैं, वो कार्यालय किसी हाई टेक कमांड सेंटर जैसा था, जहाँ एक तरफ 50 लोगों के बैठने की व्यवस्था होती है, तो वही दूसरी ओर, दसों कंप्यूटर, व्यूट्यूब लाइव के लिए अलग से स्थान, कई प्रिंटर, और हर वो टेक्निकल चीज होती है, जिसकी हमें आगे जरुरत हो सकती है. पार्टी ऑफिस की चारो तरफ दीवारों में जतिन गहरवाल जी की तसवीरें लगी होती हैं.

"भाई, आप तो बहुत ही कमाल कर दिए हो" मैं मनीष को मुस्कुराते हुए बोलता हूँ.

"थैंक्यू सर", मनीष उत्तर देता है.

दीप्ति मेरे बगल में ही शांत खड़ी हो कर अगल-बगल चीजों को देख रही होती है.

"सर मैं अब आपके इसी ऑफिस को संभालूंगा" मनीष बोलता है.

"ठीक है भाई, आप करिए" मैं उत्तर देता हूँ.

मिथलेश शुक्ला जी के साथ खड़ा एक युवा लड़का बोलता है, "सर हम लोग आपके साथ काम करेंगे, हम सभी स्टूडेंट हैं, क्लास पूरी होने के बाद हम पार्टी का कार्य करेंगे"

"हम लोग भी घर का काम कर अबसे यहीं आया करेंगे, पार्टी का काम करने" वहाँ एक अधेड़ उम्र की महिला जो रेखा भंडारी जी के साथ थी, वो कहती हैं.

दिलदार सेहगल जी भी कहते हैं कि, "और हम लोग तो रिटायर सिटीजन हैं, हम लोग क्या करेंगे घर में पार्टी कार्यालय में रहेंगे, तो देव बेटा को महापौर बनाएँगे"

Free ebook from www.advaikmalik.com

मैं सभी लोगों को मुस्कुराते हुए कहता हूँ कि, "आप सभी को शुक्रिया, बहुत-बहुत धन्यवाद, मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि, मैं आप लोगों के साथ काम कर रहा हूँ."

"अच्छा तो हमारे लिए है कि, आपके जैसा होनहार युवा हमारा नगर अध्यक्ष है" रेखा भण्डारी जी कहती हैं.

अब एक ओर जहाँ बुजुर्ग और महिलाएं कॉल कैंपेन करने लगती हैं, वहीं युवा लोग सोशल मीडिया मैनेज करने लगते हैं.

शहर की हर छोटी-बड़ी बात के ऊपर अब पार्टी की ओर से प्रेस और सोशल मीडिया में बयान जाने लगता है.

प्रेस कांफ्रेंस के विडियो, सिटी मॉनिटरिंग सिस्टम का मेरा आइडिया सभी को मनीष लगातार सोशल मीडिया में प्रमोट करने लगता है, और उसके परिणाम स्वरुप मेरे और पार्टी के रोज सोशल मीडिया फोल्लोवेर्स बढ़ने लगते हैं.

हम लोग शहर के प्रमुख चौक-चौराहों, बाजारों में जन सम्पर्क भी करना शुरू कर देते हैं, आम जनता पार्टी का निगम में महापौर बंनने पर पूरे शहर में सीसीटीवी कैमरे होंगे, शहर क्राइम फ्री बन जाएगा, जनता को प्रॉपर्टी टैक्स और वाटर बिल नहीं देना पड़ेगा, जैसे पैम्फलेट हम लोग को बाँटने लग जाते हैं. अपने इन वादों की शहर में होर्डिंग लगवा देते हैं. जनता से बहुत पॉजिटिव फीडबैक मिल रहा होता है.

मेरा ज्यादातर दिन का समय अब पार्टी कार्यालय में ही बीतने लगता हैं. रोज लोग मिलने आते, बधाइयाँ देते. दिन भर मेरा समय लोगों से मिलने में बीत जाता और रात को दीप्ति के सो जाने के बाद तक भी मैं बिस्तर में ही उसके बगल में बैठ कर लैपटॉप में सोशल मीडिया में लोगों को रिप्लाई करते रहता.

Free ebook from www.advaikmalik.com

पूर्व चुनाव में पार्षद टिकेट धांधली

एक दिन जब मैं पार्टी कार्यालय में व्यूट्यूब विडियो रिकॉर्ड कर के ही उठा था तब ही, कार्यालय में फॉर्मल सफ़ेद शर्ट-पैंट पहने एक शख्स आता है.

“गुड मॉर्निंग सर, मैंने ही आपको सुबह फ्रेंडबुक में मेसेज किया था मिलने के लिए, आप से पार्टी के बारे में कुछ बात करने”

“जी. मिस्टर.... ?” मैं थोड़ा रुकते हुए बोलता हूँ.

“भागवत वर्मा, मेरा नाम भागवत वर्मा है सर” वो उत्तर देते हैं.

“हाँ भागवत जी, बैठिये, बताइए क्या बात करनी है आपको” मैं उन्हें बैठने का इशारा करते हुए पूछता हूँ.

“सर आप बहुत ही गलत पार्टी में आ गए हैं, आप जैसा इन्सान गलत जगह फंस गया है, मुझे बहुत दुःख होता है.” वो कहते है.

“क्या मतलब, क्या कहना चाहते हो आप भाई” मैं थोडा ऑकवर्ड हो कर बोलता हूँ.

“सर, आपको पता है, पिछले निगम चुनवा में इस पार्टी के जिलाध्यक्ष बस पांच लाख रुपये में इन्डियन जन कांग्रेस के आगे बिक गए थे, और पार्टी से ऐसे लोगों को पार्षद टिकेट दिया, जो चुनाव के दिन भी अपने घर में सो रहे थे, और ऐसा ही फिर होगा.” भागवत जी बोलते हैं.

“क्या सबूत है, आपके पास इसका भाई, ऐसा इल्जाम आप कैसे लगा सकते हो?” मैं कहता हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

"इसका सबूत मैं खुद हूँ सर, मैं पार्टी में उस समय से हूँ, जब पार्टी का पंजीयन तक नहीं हुआ था, और वो भ्रस्टाचार के विरोध में एक आन्दोलन थी. लेकिन उसके बावजूद मुझे छोड़ कर मेरे वार्ड में एक उसको टिकेट दे दी गई जिसके सगे चाचा जनकांग्रेस के नेता हैं, दोनों एक ही घर तक में रहते हैं. और ये सिर्फ मेरे वार्ड में नहीं हर जगह हुआ, ऐसे लोगों को टिकेट दी गई, जिनकी राजनीती में कोई रूचि ही नहीं है, जो एक बार भी पार्टी के किसी कार्यक्रम में नहीं आए, यहाँ तक की कितने लोगों के तो सीधे सम्बन्ध इन्डियन जन कांग्रेस और भारतीय कमल पार्टी से थे. इन लोगों ने चुनाव में प्रचार तक नहीं किया. ये रही फाइल इसमें पूरे 70 वर्ड के एक-एक कैंडीडेट की पूरी कुंडली है." ऐसा बोलते हुए भागवत जी मेरी तरफ एक फाइल बढ़ाते हैं.

उस फाइल को देख कर मैं हैरान हो जाता हूँ और पूछता हूँ, "भाई, ये आपने पार्टी में सीनियर लोगों को बताया?"

"किसको बताऊँ सर, कौन मानेगा, वो प्रदेश अध्यक्ष जो यही काम विधायक चुनाव के टाइम करता है? या फिर जतिन गहरवाल जी को, वो तो हम जैसे लोगों से मिलते ही नहीं, और जब मैं उनसे मिलने राजधानी गया, तो भी मुझे वहाँ उनके स्टाफ ने बोल दिया कि, आप ये सब बातें अपने प्रदेश कार्यालय में बताइए, या फिर एक आवेदन केन्द्रीय कार्यालय में जमा कर दीजिये" भागवत जी ने बोला.

"तो आपने क्या किया सर" मैंने पुछा.

"दे दिया हूँ सर, सब लिख कर, ये फाइल भी, और वो लिस्ट भी कि, किन सही लोगों को अगर टिकेट दी जाती तो कम से कम हम पिछले चुनाव में कुछ पार्षद तो जीत ही जाते." भागवत जी कहते हैं.

Free ebook from www.advaikmalik.com

"कहाँ है ये लोग अभी सर?" मैं पूछता हूँ.

"हैं अपने-अपने घरों में अपने-अपने कामों में, इस इन्तेजार में कि, शायद कभी जतिन गहरवाल जी बत्तीसगढ़ और निवासपुर में ध्यान देंगे और ये सब बदलेगा" भागवत जी कहते हैं.

"और आप, सर आपको क्या लगता है?" मैं पूछता हूँ.

"सर, शायद ये पार्टी भी बाकि ही जैसी है, राजधानी में क्या है, मुझे नहीं पता, लेकिन बत्तीसगढ़ और निवासपुर में तो पूरी पार्टी के नेता बिके हुए हैं, जनकांग्रेस और भाकपा वालों के पास" भागवत जी कहते हैं.

भागवत जी आगे मेरे सामने एक दूसरी फाइल रखते हैं, जिसमे लिखा होता है, "पार्टी संविधान - आम जनता पार्टी" और वो कहते हैं, "ये है वो चीज जिससे ये पार्टी चलती है, पार्टी संविधान, और आपको पता है, इसके हिसाब से आप जो अभी नगर अध्यक्ष बने बैठे हैं, ये तो कोई पोस्ट है ही नहीं, ये सब जिला अध्यक्ष की शक्तियां है, जिनका इस्तेमाल करके वो अपने जिले के भीतर कोई भी पोस्ट बना सकते हैं और ऐसा ही एक पोस्ट है नगर अध्यक्ष. आपको पता है, जब पार्षद टिकेट देने का समय आएगा, तो बीफॉर्म में जिलाध्यक्ष का ही हस्ताक्षर होगा, और अभी हमारे पार्टी के जिला अध्यक्ष कौन हैं?" वो मुझसे पूछते हैं. मैं हैरानी से उनका चेहरा देखता हूँ, वो आगे कहते हैं,

"कमलेश मिश्रा, जो पिछली बारी बिक चुके हैं, और आपको पता है, अब अगला अध्यक्ष कौन बनेगा, मकबूल शेख जी, जो जनकांग्रेस के पूर्व जिला सचिव थे और अभी पार्टी छोड़े हैं. अब आप सोच लीजिये, आप जो इतनी मेहनत कर रहे हैं उन सब का क्या होगा? आप फालतू ही फंस गए हैं सर, आप अपना

Free ebook from www.advaikmalik.com

बिजनेस कर रहे थे ये ही अच्छा था." भागवत जी मुझसे कहते हैं.

मैं पार्टी संविधान के कागजों को पलटता हुआ उनसे कहता हूँ, "ठीक है, मुझे समय दीजिये, क्या मैं ये फाइल रख सकता हूँ?" मैं पूछता हूँ.

"बिल्कुल सर, ये आपके लिए ही है, और फाइल के आखरी पेज में मेरा मोबाइल नम्बर है, बताइयेगा, मेरे लायक कुछ भी सेवा हो तो. भागवत जी वहाँ से ऐसा कहते हुए चल देते हैं.

Free ebook from www.advaikmalik.com

संवैधानिक विरुद्ध नामांकित जिलाध्यक्ष

भागवत जी ने मुझे जो पार्टी संविधान की फाइल दी होती है, वो मैं दिन भर पार्टी कार्यालय में और फिर वापस अपने ऑफिस में स्वीट में आ कर अनेकों बार पढता हूँ, शायद सैकड़ों बार, उस संविधान में पार्टी के सारे नियम लिखे होते हैं.

चुनाव आयोग की वेबसाइट से मैं इन्डियन जन कांग्रेस (जनकांग्रेस) और भारतीय कमल पार्टी के भी संविधान डाउनलोड कर के उन्हें भी अनेको बार पढ़ता हूँ.

मुझे बहुत हैरानी होती है, "हे भगवान, हर पार्टी में ये सिस्टम है कि, स्टार्टिंग लेवल में ब्लाक या जिला स्तर में कार्यकर्ता अपना ब्लाक अध्यक्ष या जिलाध्यक्ष चुनेंगे, फिर ये जिलाध्यक्ष लोगों के माध्यम से प्रदेश अध्यक्ष बनेगा, और उसके बाद इन प्रदेश अध्यक्ष के द्वारा राष्ट्रिय अध्यक्ष, लेकिन किसी भी पार्टी में ये सिस्टम फॉलो ही नहीं होता, बल्कि कुछ चुनिन्दा लोग वर्षों से राष्ट्रिय हेड हैं, वो जिन्हें चाहते हैं वो प्रदेश अध्यक्ष बन जाता है, और प्रदेश अध्यक्ष जिन्हें चाहते हैं, वो ब्लॉक और जिला अध्यक्ष, जो सिस्टम लोकतांत्रिक होना चाहिए, वो तो तानाशाही का सबसे बड़ा नमूना है."

ऐसा सोचने के बाद, मैं भागवत वर्मा जी को कॉल करता हूँ, "भाई आपसे मिला जा सकता है क्या?"

"जी सर मैं बस 15 मिनट में पार्टी कार्यालय आ जाता हूँ." भागवत जी कहते हैं.

Free ebook from www.advaikmalik.com

"ठीक है भाई, आइये, मैं भी पहुँच रहा हूँ" मैं बोलता हूँ.

मैं पार्टी कार्यालय पहुँचता हूँ, गेट के सामने मेरी कार पहुंची ही है कि, मेरी नजर रोड के दूसरी तरफ ऑटो से उतर रहे भागवत जी पर पड़ती है.

मैं कार पार्क करके रोड के किनारे खड़ा हो कर उनके इस पार आने का इन्तेजार करता हूँ.

"आइये भागवत जी, और मुझे बताइए कि अब क्या करना है". मैं भागवत जी से हाथ मिलाते हुए बोलता हूँ, और हम लोग पार्टी कार्यालय में अन्दर चल देते हैं.

"बैठिये,. और बताइए कि, हमें क्या करना चाहिए" मैं उन्हें कार्यालय के अन्दर कुर्सी में बैठने का इशारा करते हुए बोलता हूँ.

"आपको क्या समझ आया सर, पार्टी संविधान पढ़ कर" भागवत जी मुझसे पूछते हैं.

"मुझे तो यही समझ आया कि, पार्टी में जिलाध्यक्ष का चुनाव पार्टी के जिला में जो कार्यकर्ता हैं, उनके माध्यम से होना चाहिए, लेकिन ऐसा आजपा में या किसी भी पार्टी में नहीं होता." मैं कहता हूँ.

"और पार्टी सदस्य मतलब?" भागवत जी मुझसे कहते हैं.

"वो लोग जो पार्टी से जुड़े हैं, पार्टी समर्थक". मैं उत्तर देता हूँ.

"नहीं सर, यहीं पर आप गलत हो गए, पार्टी संविधान के आर्टिकल 2 के अनुसार पार्टी सदस्य मतलब वो लोग जिन्होंने पार्टी सदस्यता का आवेदन भरा है, पार्टी सदस्यता शुल्क भरा है, और पार्टी के कार्यक्रमों में कम से कम छः माह से सक्रियता से आ रहा है, सिर्फ वही पार्टी का सक्रिय सदस्य है और सिर्फ

Free ebook from www.advaikmalik.com

वही लोग जिला अध्यक्ष के चुनाव में वोट दे सकते हैं, अब आप बताइए, क्या आप हैं, पार्टी के सक्रिय सदस्य? भागवत जी कहते हैं.

"शायद नहीं," मैं थोडा ठहर कर बोलता हूँ.

"बिल्कुल नहीं सर, आप नहीं हो, लेकिन मैं हूँ,और मेरे जैसे सिर्फ 50 लोग ही हैं जो पार्टी के सक्रिय सदस्य हैं." भागवत जी कहते हैं.

"मतलब अगर हम इन 50 लोगों से समर्थन ले लेते हैं कि, हमारे जिलाध्यक्ष कौन हो तो वो जिलाध्यक्ष बन जाएगा" मैं कहता हूँ.

"50 भी नहीं सर, सिर्फ 26, यही बहुमत है," भागवत जी हसते हुए कहते हैं.

"लेकिन जिलाध्यक्ष कौन हो सकता है?" मैं भागवत जी से पूछता हूँ.

वो पलटकर दिलदार सेहगल जी की तरफ इशारा करते हुए कहते हैं कि, "दिलदार जी, हर कोई इनकी रिस्पेक्ट करता है, और जब हम लोगों से कहेंगे कि, वो जनकांग्रेस से आए उनके पूर्व जिलासचिव को हमारा जिलाध्यक्ष बनवाना चाहते हैं या दिलदार जी को, तो सब लोग इन्हें ही चुनेंगे. हम लोग एक समर्थन पत्र बनवाएँगे और लोगों का हस्ताक्षर करवा लेंगे और उसके बाद उस समर्थन पत्र को जिला निर्वाचन कार्यालय में और प्रदेश अध्यक्ष को दे कर उसकी पावती ले लेंगे"

"लेकिन दिलदार जी इसके लिए मानेंगे?" मैं पूछता हूँ.

"मानेंगे, अगर आप उन्हें ये समझा दें कि, ये पार्टी के अच्छे के लिए है तो वो जरुर मान जाएँगे." भागवत जी कहते हैं.

Free ebook from www.advaikmalik.com

मैं और भागवत जी उठ कर दिलदार जी के पास जाते हैं, मेरे हाथ में पार्टी संविधान की फाइल होती है. मैं दिलदार जी से कहता हूँ, "सर, आपसे कुछ बात करनी है."

"हाँ बेटा, बोलो" दिलदार जी कहते हैं.

"सर, हम लोग आज इतनी मेहनत कर रहे हैं, क्योंकि आप लोग चाहते हैं कि, मैं महापौर बनूँ." मैं कहता हूँ.

मुझे दिलदार जी से बात करता देख कर रेखा भंडारी जी, मिथलेश जी और पार्टी के कुछ और कार्यकर्ता भी वहाँ आ जाते हैं और हमें घेर कर खड़ा हो जाते हैं.

दिलदार जी बहुत ही कॉन्फिडेंस के साथ कहते हैं, "हाँ बेटा बिल्कुल, और इसके लिए हम जी-जान लगा देंगे."

"लेकिन सर, जनकांग्रेस का पूर्व जिला सचिव, जब हमारा जिलाध्यक्ष बनेंगे तो उसके बाद वो सही लोगों को पार्षद की टिकेट देंगे, इसकी क्या गारंटी है?" मेरा ये सवाल सुन कर दिलदार जी और बाकि सभी लोग थोड़ा हड़बड़ा जाते हैं.

"बेटा, ऐसा है, ये सब प्रदेश स्तर से होता है, हम क्या कर सकते हैं" दिलदार जी हिचकिचाते हुए कहते हैं.

"बिल्कुल कर सकते हैं सर, पार्टी प्रदेश कार्यालय में बैठे कुछ लोगों की इक्षा से नहीं पार्टी संविधान के हिसाब से चलती है, और पार्टी संविधान के हिसाब से जिला के सक्रिय कार्यकर्ता जिसे चुनते हैं वो पार्टी का जिलाअध्यक्ष होता है." मैं पार्टी संविधान की फाइल दिखाते हुए दिलदार जी को कहता हूँ.

"बेटा लेकिन, ऐसे कौन जिलाध्यक्ष बनेगा? ऐसा तो कभी नहीं हुआ." दिलदार जी कहते हैं.

Free ebook from www.advaikmalik.com

"तभी सर हमारी पार्टी में होगा, इस सिस्टम को बदलने की शुरुवात हमारी पार्टी से होगी और हम बदलेंगे, आप बस ये बताइए कि, क्या आप साथ हैं?" मैं दिलदार जी से पूछता हूँ.

"मैं तो हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, देव बेटा". दिलदार जी उत्तर देते हैं.

"ठीक है सर, तो जब तक हमें कोई योग्य व्यक्ति नहीं मिलता तब तक आपको जिलाध्यक्ष के पद की रक्षा करनी है. आप मैं, रेखा मैडम, मिथलेश जी और भागवत जी निकल रहे हैं, समर्थन लेने पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओं का आपको जिला अध्यक्ष बनाने के लिए." मैं बोलता हूँ.

तभी भागवत जी अपने जेब से एक कागज निकालते हुए कहते हैं, "और ये है लिस्ट 50 सक्रिय कार्यकर्ताओं की, आप, रेखा मैडम और मिथलेश जी, आप सब लोग ये बताएं, इसमें से कितने लोग दिलदार जी को जिला अध्यक्ष बनने के लिए समर्थन पत्र देंगे और कितने नहीं?" भागवत जी कहते हैं.

इस पर रेखा भंडारी जी कहती हैं, "सबसे पहले तो इसमें से शिवनाथ सिंधानी जी का नाम काटो, क्योंकि वो तो प्रदेश-प्रदेश वाला ही है, उसे तो ये पता तक नहीं चलना चाहिए कि, हम ऐसा कुछ कर रहे हैं. और ये मिथलेश ये भी नारद मुनी है, इसका भी क्लीयर करो"

"मैं तो भैया जी के साथ हूँ, मुझे पार्षद ललना *(लड़ना)* है" मिथलेश जी कहते हैं.

"ठीक है तो फिर फाइनल होता है, आप लोग लिस्ट सेलेक्ट करिए, मैं समर्थन पत्र बना कर उनके प्रिंट निकालता हूँ" ऐसा बोल कर मैं कंप्यूटर से समर्थन पत्र बनाने लगता हूँ और बाकि लोग लिस्ट में से नामों में टिक करने बैठ जाते हैं.

Free ebook from www.advaikmalik.com

मैं समर्थन पत्र के प्रिंट ले कर उनके पास वापस जाता हूँ, और पूछता हूँ, "तो कितने लोग फाइनल हुए जो हमारा समर्थन करेंगे?" ऐसा बोलते हुए मैं लिस्ट में देखता हूँ तो उसमे आधे से ज्यादा नामों में क्रॉस लगा होता है. मैं थोडा परेशान हो जाता हूँ.

"अले भैया, क्लॉस मतलब वो सब लोग दिलदाल जी को वोट देंगे (अरे भैया, क्रॉस मतलब वो सब लोग दिलदार जी को वोट देंगे)", मिथलेश जी कहते हैं.

मैं मुस्कुराते हुए कहता हूँ, "तो फिर इन्तेजार किस बात का है, चलिए, चलते हैं, वैसे ऐसे कुल कितने लोग हैं, जो हमें वोट देंगे?"

"कुल 32 लोग, और चार तो यहीं है, दिलदार जी, मैं, भागवत और मिथलेश" रेखा भंडारी जी कहती हैं.

"चलिए फिर तुरंत चलें" मैं कहता हूँ.

और हम लोग पहुच जाते हैं, हमारी लिस्ट की पहली कार्यकर्ता सीमा बत्रा जी के यहाँ, जो राजधानी से निवासपुर रहने आई होती हैं, और वहाँ की आम जनता पार्टी की सरकार से प्रभावित हो कर निवासपुर में भी पार्टी से जुड़ी हुई होती हैं."

कार में बैठते ही साथ रेखा भंडारी जी सबसे पहले सीमा बत्रा जी को फोन करती हैं और बोलती हैं कि, "हम लोग उनसे मिलने आ रहे हैं."

उसके बाद हम लोग सीमा बत्रा जी के घर पहुँच जाते हैं. जैसे ही हम गेट खटखटाते हैं, एक 50-55 वर्ष की महिला हस्ते हुए दरवाजे से बाहर आती है.

"आइये रेखा जी, दिलदार भैया नमस्ते, और मिथलेश बेटा, भागवत बेटा कैसे हो, और आप, आप हैं देव वशिष्ठ, हमारे शहर

Free ebook from www.advaikmalik.com

के स्टार, सही?" वो सबको हस्ते हुए, हाथ पकड़ते हुए, गाल छुते हुए पंजाबी स्टाइल में हम सब को अन्दर ले जाते हुए कहती हैं.

हम अन्दर हॉल तक ही पहुंचते हैं, तब ही दिलदार जी कहते है, "सीमा बहन, हम थोड़ा जल्दी में है, पार्टी के बारे में आपसे कुछ जरुरी बात करनी है."

"क्या भैया बोलिए" सीमा जी पूछती हैं.

उनके ऐसा कहते ही सब चुप हो जाते हैं, और एक दूसरे के चेहरे को देखने लगते हैं. मैं समझ जाता हूँ कि, यहाँ से मुझे ही सम्भालना पड़ेगा, सो मैं कहता हूँ, "मैडम, आपको पता ही है, कि, हमारे नए जिलाअध्यक्ष के रूप में जनकांग्रेस से आए एक शख्स को नियुक्त किया जा रहा है, लेकिन हम लोग चाहते हैं, कि, दिलदार जी जिलाअध्यक्ष हों, आपका इस बारे में क्या विचार है?"

सीमा जी तुंरत बोलती हैं, "इससे तो अच्छा कुछ नहीं हो सकता, वो पार्टी के सबसे पुराने कार्यकर्त्ता हैं, सब उनका इतना सम्मान करते हैं, उनसे अच्छा जिलाअध्यक्ष तो हमें मिल ही नहीं सकता."

"हाँ मैडम, इसलिए हम लोग आप सभी सक्रिय कार्यकर्ताओं का समर्थन लेने निकले हैं, क्योंकि अगर आप लोगों में से 50 परसेंट लोग दिलदार जी के जिलाध्यक्ष बनने का समर्थन पत्र दे देंगे, तो पार्टी संविधान के हिसाब से वो पार्टी जिलाअध्यक्ष बन जाएँगे." भागवत जी ऐसा कहते हुए उनकी तरफ समर्थन पत्र बढ़ाते हैं.

"ये तो बहुत अच्छी बात है, लाइए बताइए कहाँ साईन करना है" सीमा जी कहती हैं और तुरंत समर्थन पत्र में साईन कर देती है.

हम सभी लोग मुस्कुराते हुए वहाँ से निकल जाते हैं, पहले ही समर्थन से हम सभी के अन्दर इतना कॉन्फिडेंस आ जाता है,

Free ebook from www.advaikmalik.com

कि, उसके बाद तो बिना किसी संकोच के दिलदार जी खुद ही सभी से हाथ जोड़-जोड़ कर समर्थन पत्र भरवाने लगते हैं.

आधी दूर मैं ड्राइव करता, जब मैं थक जाता तो भागवत जी ड्राइव करते, बीच में दोपहर में हम एक ढाबे में खाना खाते हैं. कुछ से हम उनके घरों में मिलते हैं तो कुछ से हम उनके ऑफिस और दुकानों में तो कुछ जो लोग अपने दोस्त और रिश्तेदारों के घर गए होते हैं , हम वहाँ भी पहुँच जाते हैं. रात 2 बजे तक हम पूरा जिला घूम कर लगभग सभी लोग का समर्थन पत्र ले चुके होते हैं.

हम इतने कॉंफिडेंट थे कि, हम लास्ट में उन लोगों से भी मिलने चले गए, जिनका हमें पता था कि, वो हमें समर्थन पत्र नहीं देंगे और हैरानी तो ये थी कि, उनमे से भी आधे से ज्यादा लोगों ने हमारे पास इतने सारे समर्थन पत्र देख कर हमें अपना समर्थन दे दिया.

काम खत्म होने के बाद मेरा ऑफिस रास्ते में पहले पड़ रहा था, मैंने घड़ी देखी तो करीब दो बजे थे, गाड़ी उस समय भागवत जी चला रहे थे, मैं कहता हूँ "भागवत भाई, आप मुझे यही ड्राप कर दीजिये, उसके बाद दिलदार सर, रेखा मैडम और अनिलेश जी को छोड़ दीजियेगा और सुबह मुझे लेने आ जाइएगा, हम लोग ग्यारह बजे इन कागजों को जिला निर्वाचन कार्यालय देने चलेंगे, आवेदन में क्या लिखना है वो आप मुझे चैटएप में भेज दीजियेगा."

मेरा ऑफिस आता है, सभी को जय हिन्द बोल कर मैं कार से उतर जाता हूँ, ऑफिस ओपन कर के जब मैं अपने स्वीट में जाता हूँ, तो दीप्ति वहाँ नहीं होती, मुझे बहुत अजीब लगता है, मैं दीप्ति को फोन करने के लिए अपना मोबाइल देखता हूँ, तो

Free ebook from www.advaikmalik.com

उसमे दीप्ति के कई मिस कॉल और एक मेसेज आया होता है कि, "आप ऑफिस नहीं आ रहे इसलिए मैं हॉस्टल जा रही हूँ"

Free ebook from www.advaikmalik.com

प्रदेश अध्यक्ष का शहर आ कर समझाइश

अगले दिन सुबह भागवत जी मेरी कार ले कर ऑफिस के बाहर पहुँच कर मुझे कॉल करते हैं, "देव सर आपके ऑफिस के बाहर हूँ".

"आ रहा हूँ" मैं उत्तर देता हूँ.

दीप्ति उस समय मेरे साथ रूम में ही थी. "तो आप आज नास्ता नहीं करोगे" वो कहती है.

"नहीं यार, मुझे जिला निर्वाचन कार्यालय जाना हैं, मैं चलता हूँ, बाय, लव यू", मैं दीप्ति को बाय करता हुआ बाहर आ जाता हूँ.

मैं और भागवत जी जिला निर्वाचन कार्यालय पहुँचते हैं और हम दोनों उस आवेदन को ले कर अन्दर कार्यालय की आवक-जावक साखा में जाते हैं. भागवत जी मेरे हाथ से आवेदन ले कर, उसे सीधा आवक-जावक शाखा में बैठे अधिकारी की टेबल पर रख देते हैं.

वो अधिकारी आवेदन का विषय पढ़ता है, और हम दोनों का चेहरा देखता है, उसके बाद चुप-चाप, अपनी टेबल से स्टाम्प उठा कर आवेदन की एक प्रति में लगा कर हमें दे देता हैं.

"आपका आवेदन रिसीव हो गया सर" वो अधिकारी बोलता है.

भागवत जी सर हिलाते हैं, और हम दोनों कार्यालय से बाहर आ जाते हैं. मैं पूछता हूँ, "तो अब काम खत्म भागवत जी?"

Free ebook from www.advaikmalik.com

"नही सर, अभी तो हमें इसकी सूचना पुलिस अधीक्षक और प्रेस क्लब में भी देनी है, देखिये आपने जो आवेदन प्रिंट किया है, उसमे इन दोनों का भी नाम है" भागवत जी कहते हैं.

"हाँ, तो चलिए" मैं भागवत जी से कहता हूँ.

एक-एक कर के हमारे आवेदन में सभी जगह के स्टाम्प लग जाते हैं, तभी मुझे फोन आता है, शिवनाथ सिंधानी जी का, "जय हिन्द देव जी, आप कहाँ है, प्रदेश अध्यक्ष जी आए हुए हैं, सिर्किट हाउस में हैं, आप से मिलना चाहते हैं."

"जय हिन्द सर, मैं बस पास ही में हूँ, आ रहा हूँ." मैं उत्तर देता हूँ.

जब मैं भागवत जी के साथ सर्किट हाउस पहुँचता हूँ, तो वहाँ कमरे में सोफे में प्रदेश अध्यक्ष, राज हुपेंडी जी, और उनके बगल में दिलदार सेहगल जी, रेखा भंडारी जी, शिवनाथ सिंधानी जी होते हैं, सोफे के किनारे में मिथलेश शुक्ला जी के साथ और कुछ कार्यकर्त्ता भी होते हैं.

"देव जी, आप ये सब क्या कर रहे हैं?" राज हुपेंडी जी बोलते हैं.

"सर, सॉरी, क्या मैं नहीं समझा." मैं उत्तर देता हूँ.

"आपकी इन सब हरकतों से पार्टी के सिस्टम में सवाल उठ रहे हैं, और ऐसा मैं बिल्कुल नहीं होने दूंगा, आपने जो सब किया है, उसके कारण अब मुझे आपकी पार्टी सदस्यता पर विचार करना होगा." राज हुपेंडी जी बोलते हैं.

उनकी ये बात सुन कर, मुझे शायद गुस्सा आ जाता है, मैं बगल में बैठे कार्यकर्ता को उठने कहता हूँ, और उसकी कुर्सी को खींच कर ठीक राज हुपेंडी जी के सोफे के सामने रख कर बैठता हूँ और कहता हूँ, "सुनियो, मनोनित प्रदेश अध्यक्ष जी, मुझे सिर्फ

Free ebook from www.advaikmalik.com

एक दिन लगा है, निवासपुर में लीगल जिला अध्यक्ष बनाने में, और प्रदेश भर में सिर्फ बत्तीस ही जिले हैं, मतलब मात्र सत्रह दिन में मैं सत्रह लीगल जिला अध्यक्ष बनाने के बाद, अट्ठारहवें दिन खुद प्रदेश अध्यक्ष बन जाऊंगा, वो भी लीगल, पार्टी संविधान के हिसाब से, इसलिए मुझसे तो ये तीन-पांच की बात करिए ही मत."

मैं टेबल में रखी लड्डू की प्लेट उनकी तरफ करते हुए बोलता हूँ कि, सम्मान के साथ निवासपुर आए हैं, लड्डू खाइए, और सम्मान के साथ जाइये, आपके लिए पूरा बत्तीसगढ़ है, बस इतना ध्यान रखिये, कि, आज से ये निवासपुर बस मेरा है."

सभी लोग मेरा मुँह देख रहे होते हैं, मैं इतना कह कर कमरे से बाहर निकल जाता हूँ. मेरे साथ सिर्फ भागवत जी बाहर आते हैं.

"सर, अब आगे क्या?" भागवत जी गेट से बाहर आते ही पूछते हैं.

"अब क्या, पहले तो चाय पियेंगे, जो बजाना था, हमने बजा दिया, अब चलिए" मैं मुस्कुराते हुए भागवत जी को कहता हूँ.

हम दोनों चाय पीते हैं, और उसके बाद भागवत जी वहाँ से मुझे "जय हिन्द सर, कुछ काम होगा तो बताइयेगा" कह कर चले जाते हैं.

मेरा भी सर बहुत दर्द कर रहा था, तो मैं सीधा ऑफिस चल देता हूँ, जैसे ही मैं अपने स्वीट में पहुँचता हूँ, दीप्ति वहाँ अपना बैग पैक कर रही होती है.

"मुझे घर जाना पड़ेगा, अर्जेंट, दादी की तबियत बहुत खराब है, मैं तुरंत निकल रही हूँ, मैंने टिकेट बुक करा ली है." दीप्ति कहती है.

Free ebook from www.advaikmalik.com

"फिर कब आओगी आप?" मैं थोडा मायूस हो कर पूछता हूँ.

"देखती हूँ, जैसे ही सिचुएशन ठीक होती है आ जाउंगी, आप अपना ख्याल रखना." दीप्ति कहती है.

"मत जाओ यार, मुझे बहुत अजीब फील हो रहा है." मैं दुखी हो कर बोलता हूँ.

"मैं तो पहले से ही तुम्हे इस सब राजनीति-वाजनीति से दूर रहने कहती थी, देखो अपना क्या हाल कर लिए हो, न खाने का होश, न सोने का पता, भगवान ही जाने आगे क्या होगा, खैर मैं लेट हो रही हूँ, अपना ख्याल रखना, बाय, लव यू." ऐसा बोलते हुए दीप्ति मेरे गले लगती है, और चल देती है.

Free ebook from www.advaikmalik.com

राजधानी से प्रदेश अध्यक्ष का ऑफर

राज हुपेंडी जी को तो मैं एक तरह से धमकी दे आया था, पर अब आगे मैं क्या करूँगा, ये मुझे बिल्कुल नहीं पता था. दिलदार सेहगल जी और पार्टी के सभी लोग जिस हिसाब से उनके साथ बैठे थे वो भी मुझे बहुत परेशान कर रहा था.

इन सब में दीप्ति का चल देना मुझे और भी कमजोर कर दिया था. मैं बिस्तर में लेट जाता हूँ. थोड़ी देर बाद मेरा फ़ोन रिंग करता है, फ़ोनकॉलर में लिखा आता है, "केन्द्रीय कार्यालय, आम जनता पार्टी".

"हैलो", मैं फोन उठा कर बोलता हूँ.

"मिस्टर देव मैं आम जनता पार्टी केन्द्रीय कार्यालय से बोल रहा हूँ, सुनने में आ रहा है कि, आप पार्टी प्रदेश अध्यक्ष बनने के इक्षुक हैं?" फोन में दूसरी तरफ वाला व्यक्ति बोलता है.

"आप का गुड नेम मैं जान सकता हूँ?" मैं सवाल पूछता हूँ.

"मैं आपका राष्ट्रिय अध्यक्ष जतिन गहरवाल ही बोल रहा हूँ, आप ये समझ लीजिये." सामने वाला व्यक्ति उत्तर देता है.

"अच्छा तो आप जतिन गहरवाल जी बोल रहे हैं, ठीक, बताइए." मैं थोडा व्यंग्य के साथ बोलता हूँ.

"क्या आप सौ करोड़ रुपये हर महीने मैनेज कर सकते हैं? पूरा पैसा कैश में रहेगा, हो पाएगा, आपसे क्रेडिट-डेबिट?" वो व्यक्ति सवाल पूछता हैं.

Free ebook from www.advaikmalik.com

उसकी ये बात सुन कर मैं थोड़ी देर शांत रह जाता हूँ. वह व्यक्ति आगे बोलता है.

"अगर आपसे मैनेज हो सकता है तो आइये राजधानी आपके लिए प्रदेश अध्यक्ष की नियुक्ति इन्तेजार कर रही है, और अगर नहीं हो पाएगा, तो मैं आपको ये आखिरी चेतावनी दे रहा हूँ, सिस्टम से खेलने की कोशिश मत कीजिये." वह व्यक्ति बोलता है.

उसकी ये बातें स्पष्ट धमकी थी. उसकी यह बात सुन कर मुझे फिर गुस्सा आ जाता है, ठीक वैसा ही जैसा राज हुपेंडी की बात सुन कर आया था.

मैं उसे उत्तर देता हूँ, "ओ मिस्टर, कहाँ से बोल रहे हो आप, केंदीय कार्यालय से या कहाँ से, मैं आ रहा हूँ राजधानी, खुद मिलता हूँ जतिन गहरवाल जी से, ये कॉल रिकॉर्ड हो रही है."

वो व्यक्ति हसते हुए बोलता है, "कॉल रिकॉर्ड, वो तो सबकी हो रही है, खैर लगता है आपको अभी तक समझ नहीं आया, ठीक है अब आगे आप खुद जिम्मेदार है." ऐसा बोल कर वो व्यक्ति फोन काट देता है.

मैं तुरंत अपना लैपटॉप चालू करता हूँ और फ्लाइट बुक करने के लिए वेबसाइट लगता हूँ. जैसे ही मैं वेबसाइट लगाता हूँ, उसमे लिखा आ रहा होता है कि, कफ़19 के कारण फ्लाइट में सिर्फ वेक्सिनेटेड लोग या बहत्तर घंटो के भीतर आरटीपीसीआर की रिपोर्ट के साथ ट्रेवल किया जा सकता है.

"शिट, मुझे वैक्सीन लगी नहीं है और अगर आरटीपीसीआर कराता हूँ और पॉजिटिव आ गया तो ये लोग मुझे इक्कीस दिन के लिए कवारेनटीन कर देंगे, ट्रेन टिकेट ट्राई करता हूँ" मैं ऐसा सोच रेलवे की वेबसाइट लगता हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

बड़ी हैरानी की बात होती है, उसमे भी उसी तरह का वेक्सिनेटेड या आरटीपीसीआर की गाइडलाइन आ रही होती है.

फ्लाइट और रेलवे का आप्शन कैंसिल होने के बाद, मैं डिसाइड करता हूँ कि, अब मैं राजधानी अपनी खुद की कार से ही जाऊंगा. बाहर ऑफिस में जा कर मैं अपने ड्राईवर दिनेश ध्रुव जी को बोलता हूँ, "दिनेश जी, हम लोग अभी कार से राजधानी के लिए निकल रहे हैं, आप अपने घर जाइये, और कपड़े और जरुरी सामान पैक कीजिये, मैं आपके घर ही आ रहा हूँ."

"सर लेकिन राजधानी करीब पंद्रह सौ किलोमीटर हैं यहाँ से." दिनेश जी कहते हैं.

"हाँ, मुझे पता है, मैंने डूडल किया है, करीब 25 घंटे लगेंगें, लगातार ड्राइव करते हुए जाने पर, आराम से रुकते हुए जाएँगे, आधी दूर आप ड्राइव करना, आधी दूर मैं ड्राइव करूँगा, रुकते-रुकते तीसरे दिन पहुँच जाएँगे." मैं उत्तर देता हूँ.

"ओके सर," दिनेश जी ऐसा कह कर अपने घर के लिए निकल जाते हैं. मैं भी अपने स्वीट में जाता हूँ और एक बैग ले कर उसमें कुछ कपड़े और अपने जरुरी समान पैक कर लेता हूँ.

मैं करीब एक सप्ताह के लिए निवासपुर से बाहर जाने वाला था, तब ही मेरे मन में ख्याल आता है कि, एक बार घर में भी माँ-पापा लोगों को बता कर और मिल कर जाता हूँ. ऐसा सोच कर मैं घर पहुँच जाता हूँ.

जैसे ही घर में मैं हॉल में इंटर करता हूँ, पापा और मम्मी वहीँ सोफे पर बैठे होते हैं, जैसे मेरा ही इन्तेजार कर रहे हों.

"मैं राजधानी जा रहा हूँ, एक हफ्ते निवासपुर से बाहर रहूँगा, इसलिए सोचा आप लोगों से मिलता हुआ जाऊँ." मैं कहता हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

“राजधानी जा रहा टिकेट हो गई, फ्लाइट से जा रहा है?” माँ पूछती है.

“नहीं, कफ़19 का ड्रामा चल रहा है, कार से जा रहा हूँ, दिनेश जी भी साथ जा रहे हैं.” मैं उत्तर देता हूँ.

“लेकिन क्यों जा रहा है, वो भी कार से?” माँ थोडा परेशान हो कर पूछती है.

“कुछ राजनीतिक काम है.” मैं बोलता हूँ.

“अगर ऐसा है तो तेरे पापा भी तेरे साथ जाएँगे, इन्हें भी ले जा साथ.” माँ कहती है.

“लेकिन पापा का ऑफिस?” मैं कहता हूँ.

“कोई ऑफिस नहीं, अब तुम्हारे साथ रहना ही मेरा गवर्नमेंट आर्डर है, मैं डीडीए सर से बात कर लूँगा.” पापा कहते हैं.

“पर मैं अभी तुरंत निकल रहा हूँ.” मैं कहता हूँ.

“हाँ, तो ये भी तुरंत रेडी है तेरे साथ जाने के लिए” ऐसा बोलते हुए माँ अन्दर वाले कमरे में जाती हैं और एक बैग ले कर आ जाती हैं, जैसे मानो उन्होंने वो बैग पहले से पैक करके रखा हो.

पापा और मैं वहाँ से दिनेश जी को लेने उनके घर के पास पहुँचते हैं. उनके घर के पास पहुँच कर मैं उन्हें कॉल करता हूँ.

वो आते हैं, और ड्राईवर सीट में वो बैठ जाते हैं. हम दिन भर ड्राइव करते और रात को जिस बड़े शहर में होते वहाँ योयो होटल बुक करके रुक जाते.

ऐसा करते हुए हम लोग तीसरे दिन पहुंच जाते हैं राजधानी.

Free ebook from www.advaikmalik.com

राष्ट्रिय अध्यक्ष से अजीब मुलाकात

जैसे ही मैं राजधानी पहुँचता हूँ, मेरे फ़ोन में कॉल आता है, शिवनाथ सिंधानी जी का, मैं कॉल उठाता हूँ.

"जी सर, जय हिन्द, बोलिए?" मैं पूछता हूँ.

शिवनाथ सिंधानी जी कहते हैं, "कहाँ हो बेटा, मैं और रेखा मैडम, तुम्हारा साथ देने निवासपुर से आए हुए हैं, तुम कहाँ हो अभी?"

"सर, मैं अभी पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय जा रहा हूँ, यह लिखित में शिकयत करने की पार्टी संविधान के अनुसार निर्वाचित जिला अध्यक्ष को एक नामांकित प्रदेश अध्यक्ष नहीं स्वीकार रहा है. इस आवेदन में मैं पावती लूँगा, और सात दिन तक इन्तेजार करूँगा."

"नहीं, बेटा, एक बार पहले जतिन जी से मिल लेते हैं, देखते हैं वो क्या कहते हैं?" शिवनाथ जी बोलते हैं.

"उनसे भी मिलूँगा सर, लेकिन पहले मुझे पावती चाहिए, आप लोग जतिन जी के घर के पास रहिएगा, मैं भी वहीँ आ रहा हूँ." ऐसा कह कर मैं फोन काट देता हूँ.

हम लोग पूछते हुए और आधा डूडल के भरोसे आम जनता पार्टी के केन्द्रीय कार्यलय पहुंचते हैं, जो लगभग खाली पड़ा होता है.

जो लोग होते हैं, वो भी काम नहीं कर रहे होते हैं. इससे ज्यादा बड़ा कार्यालय में काम का बोझ तो मुझे पार्टी के निवासपुर कार्यालय में लगता है.

Free ebook from www.advaikmalik.com

खैर, ये सब देखने के बाद वहाँ एक बुजुर्ग सज्जन से मैं बोलता हूँ कि, "सर, एक आवेदन जमा करना है, राष्ट्रिय अध्यक्ष जी के नाम पर, कहाँ जमा हो सकता है?"

वो सज्जन रिप्लाई करते हैं कि, "लाओ मुझे ही दे दो."

"लेकिन पावती में हस्ताक्षर और स्टाम्प लगेगा" मैं आवेदन को हाथ से दिखता हुआ उत्तर देता हूँ.

"ठीक है न, तो हम भी तो देंगे, पावती" वो सज्जन मुस्कुराते हुए बोलते हैं.

हम लोग आवेदन में पावती लेने के बाद एक फोटोकॉपी दुकान से उसका कॉपी बनवाते हैं, और पहुंच जाते हैं, जतिन गहरवाल जी के घर के पास.

जैसे ही मैं वहाँ पहुँचता हूँ, मैं देखता हूँ कि, शिवनाथ जी और रेखा भंडारी मैडम पहले से वहाँ हैं.

जतिन गहरवाल जी के घर के गेट पर गार्ड लोगों के पास एक फोन लगा होता है, जिसमें मिलने वाले का कारण बता कर अन्दर भेजने की अनुमति ली जा रही होती है.

शिवनाथ जी तुरंत वो माइक लेते हैं और कहते हैं कि, "सर हमें जतिन जी से मिलना हैं, निवासपुर में पूरी पार्टी इललीगल हो गई है, हम आपसे मिल कर सबका प्रमाण दिखाना चाहते हैं."

यह सब सुन कर अंदर से उत्तर आता है कि, "आप एक शिकायत बना कर केन्द्रीय कार्यलय में जमा करा दीजिये."

मुझे वह आवाज जतिन गहरवाल जी की जैसी ही लगती है. अब हमें वहाँ मिलने से मना कर दिया गया था, आवेदन मैं पहले ही दे चुका होता हूँ, तो, अब हम करे तो करें क्या?

Free ebook from www.advaikmalik.com

इसी दुविधा में हम चारों एक होटल में आ जाते हैं, काफी देर तक हम चारों की बात होती है, उसके बाद सभी अपने-अपने कमरे में आराम करने के लिए चले जाते हैं.

पर मेरा ध्यान उस फ़ोन और जतिन गहरवाल जी के घर पर ही होता है, तो मैं चोरी छुपे फिर होटल से उठता हूँ, और ऑटो कर के पहुंच जाता हूँ जतिन गहरवाल जी के घर.

सिक्यूरिटी गार्ड जैसे ही मुझे इस बार फोन देते हैं मैं कहता हूँ कि, "मैं, मेरे जतिन गहरवाल जी से मिलने आया हूँ."

इसके आगे मैं एक शब्द नहीं बोलता. थोड़ी देर में सामने से आवाज आती हैं, "उन्हें अन्दर भेजिए".

मैं जैसे ही अन्दर जाता हूँ, मुझे सोफे में जतिन गहरवाल जी और उनके बगल में एक लड़का खड़ा दिखता है. कमरे के बगल में कांच से पार्टीशन किया हुआ होता है, जहाँ पूरा आईटी सेल जैसी एक टीम बैठी होती है.

मुझे देखते ही साथ जतिन गहरवाल जी कहते हैं कि, "देव बैठिये, आप को जैसा लगता है, सरकार और सिस्टम वैसे बिल्कुल नहीं है. मैं मानता हूँ आप में काबिलियत है कि, आप इस सिस्टम को समझें और उसे चलाएँ, लेकिन अभी वो समय नहीं है."

"सर आप मेरा नाम कैसे जानते हैं" मैं हैरानी के साथ पूछता हूँ.

"देव जी, यही तो सिस्टम है, अच्छा बोलिए क्या बोलना चाहते हैं आप?" जतिन जी मुझसे पूछते हैं.

"सर निवासपुर में पार्टी...." मैं इतना ही बोला होता हूँ कि, जतिन जी आगे बोलते हैं, "निवासपुर में पार्टी संविधान के हिसाब से नहीं चल रही, यही कहना चाहते हैं न आप? वो तो देश की कोई

Free ebook from www.advaikmalik.com

भी पार्टी नहीं चल रही, देश ही देश के संविधान के हिसाब से नही चल रहा, तो बताइए हम क्या करें?"

जतिन जी आगे बोलते हैं कि, "लेकिन हमें तो लड़ना है न देव जी, और लोहे को काटने के लिए लोहा ही लगता है, इसलिए हम भी वैसे ही हैं"

"गलत सर, लोहे को सिर्फ लोहा ही नहीं हीरा भी काट सकता है, पर आप वो हीरा नहीं है, मिस्टर जतिन गहरवाल" मैं भारी आवाज में बोलता हूँ.

"हा.. हा..." जतिन जी हसते हुए कहते हैं, "देखते हैं, जनता क्या मानती और जानती है."

इसके बाद मैं मेरे जेब से फोन निकलता हूँ, उन्हें वो कॉल रिकॉर्डिंग सुनाने जिसमें उनका नाम लेकर मुझे मनी लॉन्डरिंग के लिए कहा जा रहा था, लेकिन जैसे ही मैं जेब से फोन निकालता हूँ, वो फ़ोन खुद से रिसेट हो जाता है. मैं कांच के पार्टीशन के दूसरी तरफ बैठी आईटी टीम को देख कर मुस्कुराता हूँ, और सोचता हूँ, "वाह, मेरा फोन हैक." इसके बाद मैं "ठीक है सर, आपसे मिलकर मेरी बहुत सारी गलतफैमियां दूर हुईं. अब मैं चलता हूँ." ऐसा कह कर बाहर आ जाता हूँ.

होटल पहुँच कर मैं चुप-चाप अपने कमरे में चला जाता हूँ और शाम को हम लोग राजधानी से वापस निवासपुर के लिए निकल जाते हैं.

पूरे रास्ते मैं चुप-चाप आता हूँ. पापा और तीसरे दिन हम लोग निवासपुर पहुँच जाते हैं.

Free ebook from www.advaikmalik.com

मैं अपना फ़ोन देखता हूँ तो उसमें पार्टी के चैटएप ग्रुप में मेरे बारे में कई पोस्ट होते हैं. सभी पोस्ट शिवनाथ सिंधानी जी ने किये होते हैं.

पार्टी में विरोध के आरोप में मुझे पार्टी से बाहर निकालने की सूचना आम जनता पार्टी के उन्ही चैटएप ग्रुप में पोस्ट की गई होती है जो मैंने बनाए थे. रतन लस्सी के पास वाले पार्टी कार्यालय को भी अमान्य घोषित कर दिया गया होता है.

ये सब देख कर मैं ऑफिस की जगह सीधे घर चले जाता हूँ और जा कर सो जाता हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

माइंड कम्युनिकेशन का पता चलना

बिना खाना-पानी के शायद मैं करीब 48 घन्टों से भी ज्यादा समय तक सोया रहता हूँ. लगभग बेहोश हालत में. जब मेरी नींद खुलती है तो सुबह छः बजे का समय होता है.

वर्षों बाद मैं अपने घर के पूजा स्थान में जाता हूँ, और हाथ जोड़ कर दुर्गा माता से प्रार्थना करता हूँ कि, "हे माँ आपने मुझे ये बुद्धि ही क्यों दी कि, मैं लोगों के हित के बारे में कुछ सोच सका और जब आपने मुझे ये बुद्धि दी है तो अब आप ही ताकत भी दो कि, मैं इस सिस्टम से लड़ सकूं."

इतने में मुझे पापा की पीछे से आवाज सुनाई देती है, "देव, सुबह पूजा स्थान में?"

पापा की आवाज सुन कर मैं पीछे पलटता हूँ. पापा मेरी तरफ आते हैं. मुझे आगे सुनाई देता है, "भगवान मेरे बेटे के साथ क्या हो रहा है?"

मेरा हैरानी का कोई ठिकाना नहीं रहता है, क्योंकि मुझे पापा के मन यानि माइंड की बात सुनाई दे रही होती है. वो ये सब अपने मुहं से बोल ही नहीं रहे होते हैं, बल्कि वो ये सब बात अपने माइंड में सोच रहे होते है और मैं उनके मन की बात सुन सक रहा होता हूँ.

मैं कहता हूँ कि, "पापा, मुझे आपके मन की बात सुनाई दे रही है."

Free ebook from www.advaikmalik.com

पापा उत्तर देते हैं, "आप इस क्षेत्र के नेता हैं, सरकारी अधिकारियों से बड़े हैं, आप तो हम सब के मन की बात जानेंगे ही. आपका क्या आदेश है ये बताइए सर?"

पापा की अजीब बात सुन कर मैं बोलता हूँ, "पापा ये क्या बोल रहे हो आप, मुझे आपके मन की बात सुनाई दे रही है, मुझसे फिर से माइंड में बात करिए."

"बेटा ये क्या माइंड में - मन में बात बोल रहे हो, मन की बात तो प्रधानमंत्री जी का रेडियो कार्यक्रम है, जो हर रविवार आता है, तुम क्या मन की – माइंड की बात बोल रहे हो? मुझे समझ नहीं आ रहा है."

"नहीं, आप झूठ बोल रहे हो, आप दोबारा मुझसे माइंड में बात कीजिए." मैं थोडा जोर से बोलता हूँ और उसके बाद अपने कमरे में चला जाता हूँ.

बिस्तर में बैठने के बाद मुझे अजीब सी हंसी आती है, और मन में मैं कहता हूँ कि, "हे भगवान, इस दुनिया की सबसे छोटी इकाई जिसे हम अणु या एटम बोलते हैं, उसका स्ट्रक्चर और सबसे बड़ी इकाई यानि हमारा सोलर सिस्टम - सौर्य मंडल, उसका स्ट्रक्चर दोनों का स्ट्रक्चर एक जैसा है. सिस्टम को समझने के लिए मुझे सिस्टम की किसी एक इकाई को समझना पड़ेगा और सिस्टम सुधारने के लिए भी सिस्टम की एक इकाई को ही सुधारना पड़ेगा."

धीरे से मुझे और यह एहसास होता है कि, "देश में प्रधानमंत्री, राज्य में मुख्यमंत्री और शहर में महापौर सबका अपने-अपने क्षेत्र में एक ही पॉवर, एक ही काम है, जन सेवा, जो नहीं हो रही है, इसलिए मुझे महापौर बनना है और मुझे इसके लिए सोचना पड़ेगा"

Free ebook from www.advaikmalik.com

मैं इतना सोचा ही होता हूँ कि, अचानक से मेरे पड़ोसी और पापा के मित्र अनिल सिंह अंकल जी, मेरे कमरे में आते हैं, और कहते हैं कि, "चलो बेटा, तुम्हें लेने गाड़ी आई है."

मैं घर से बाहर आता हूँ, तो वो एक एसयूवी कार होती है, जिसमें एक पुलिस वाला और एक ड्राईवर होता है, यानी वैसी ही व्यवस्था जो एक महापौर के पास होती है. मुझे थोड़ी हैरानी होती है और मैं सोचता हूँ कि, "मैंने अभी बस इतना सोचा कि, मैं महापौर बनूँगा, और मुझे ऐसा बर्ताव होने लगा जैसे मैं महापौर ही हूँ."

मैं गाड़ी में बैठता हूँ और हस्ते हुए कहता हूँ कि, "जय माता की भैया लोग, आखिर किससे मिलवाने ले जा रहे हो आप लोग मुझे, शहर के मालिक से?, वो तो अब मैं हूँ. मैंने डीसाइड कर लिया है, अभी निगम में 70 में से सिर्फ 36 पार्षद के साथ जनकांग्रेस का महापौर हैं, उन 36 में से सिर्फ 5 पार्षद खरीदूंगा और बोलूँगा कि, तुमको निगम में मंत्री पद, एक-एक एसयूंवी और भ्रस्टाचार का पैसा अलग से, और आज से ही मैं मेयर हूँ. तो बताओ आप लोग अब अपने नए मेयर को कहाँ ले जाएँगे."

वो दोनों एक दूसरे का मूँह देखते हैं, तभी मैं आगे कहता हूँ, "स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट अप्रूव हैं न शहर में? तो, बोल दीजिये सिस्टम को कि, अब आप लोग मुझे जहाँ से भी ले जाएँगे, उन सड़कों को आपको स्मार्ट रोड बनाना पड़ेगा, नहीं तो मुझे पता है, मुझे क्या करना है. सिर्फ एक पत्र बनाऊंगा अपने ऊपर वाले को और जोर-जोर से धिन्डोरा पिटूँगा की ये ऊपर वाले न तो काम करते हैं, ना ही काम करने देते हैं. सोचलो सिस्टम की वाट लग जाएगी मामू..... हा.. हा.." मैं हस्ते हुए कहता हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

इतने में उस गाड़ी में रखे वायरलेस में आवाज आती है कि, "हेलो, कंट्रोल, हेलो, रिलीज़ मिस्टर देव वशिष्ठ नाव, आई रिपीट, रिलीज़ मिस्टर देव वशिष्ठ नाव."

इतना सुन कर वो पुलिस अधिकारी मुझे हाथ जोड़ कर बोलता है कि, "सॉरी सर, प्लीज हम आपको कहीं नहीं ले जा सकते, प्लीज आप गाड़ी से उतर जाइये."

"हूँ, ठीक ओके" बोल कर मैं गाड़ी से उतर जाता हूँ और वापस अपने कमरे में चल देता हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

सिस्टम नियंत्रण का पहला राज

सुबह करीब नौ बज रहे होते हैं, पापा,अनिल अंकल के साथ कही बाहर चले गए होते हैं.

मैं किचन में जा कर माँ से बोलता हूँ कि, "पापा कहाँ हैं?"

"बेटा वो काम से गए हैं, आ जाएँगे, बता भूख लगी है?" माँ पूछती है.

"हाँ, माँ भूख लगी है" मैं उत्तर देता हूँ.

"बना रही हूँ, तेरी पसंद की गोभी आलू की सब्जी और पराठा, थोड़ी देर में तैयार हो जाएगा" माँ उत्तर देती है.

थोड़ी धीमी आवाज में माँ आगे कहती है कि, "बेटा कुछ बोलूं तुझे?"

"हाँ माँ, बिल्कुल बताइए" मैं तुंरत बोलता हूँ.

"बेटा तू जो भी राजनीती करता है उसका असर तेरे पापा पर पड़ता है, वो एक सरकारी कर्मचारी हैं तुझे पता है न?" माँ कहती है.

"हाँ माँ, लेकिन मैं क्या करूँ, कुछ समझ नहीं आता?" मैं कहता हूँ.

"बेटा, हर धर्म में लिखा है कि, हम सब इश्वर का अंश हैं और ये पूरी दुनिया कैसे बनी है तुझे पता है?" माँ पूछती है.

"कैसे माँ?" मैं भी सवाल पर सवाल करता हूँ.

Free ebook from www.advaikmalik.com

"बेटा ये दुनिया बनी है इश्वर की इक्षा से, वो जैसा चाहते हैं वैसी, तू अपनी जिंदगी और ये दुनिया कैसी चाहता है, वो सोचना शुरू कर, उस पर काम कर, यही तेरा सही काम है" माँ कहती है.

"माँ मैं तो चुप चाप कंपनी चला रहा था, उसके बाद पुलिस आई तो ये सीसीटीवी कैमरा वाला आईडिया आया, उसके बाद आम जनता पार्टी आ गई, और अब ये सब कुछ" मैं परेशान होते हुए कहता हूँ.

"बेटा, वो सब तो बीती बात हो गई, तू अब आगे क्या चाहता है करना, उसको सोच और वो काम कर, और इन नेताओं सिस्टम से थोड़ा सम्भल कर, क्योंकि तू जो भी करेगा, उसका असर तेरे पापा पर न हो ये देख कर करना." माँ थोडा चिंतित हो कर बोलती हैं.

"अच्छा ये ले खाना तैयार है" माँ थाली मेरे तरफ करते हुए कहती है.

मैं खाना लेता हूँ और अपने रूम में चला जाता हूँ. खाना खा कर मैं माँ को "आ रहा हूँ" बोल कर निकल जाता हूँ, शिवनाथ सिंधानी जी को मिलने.

मैं शिवनाथ जी के घर पहुँचता हूँ. जैसे ही मैं कार रोकता हूँ वो घर से बाहर अपने मेन गेट के पास होते हैं.

मैं जैसे ही शिवनाथ जी के घर पहुँचता हूं, वो मेरा हंसते हुए स्वागत करते हैं, लेकिन अपने माइंड में मुझ से निवेदन कर रहे होते हैं कि, मैं वहां से चला जाऊं.

मैं उनके माइंड में चल रही बातों को सुन सक रहा होता हूँ. मैंने सबसे पहली बार अपने पापा के माइंड में बोली जा रही बातों

Free ebook from www.advaikmalik.com

को सुना था, शिवनाथ जी ऐसे दूसरे व्यक्ति थे जिनकी माइंड में बोली जा रही बातें मुझे सुनाई दे रही होती हैं.

उनका ये निवेदन कि, मैं वहाँ से चला जाऊ, यह सुनकर मैं उनसे मुस्कुराते हुए बोलता हूं कि, "सर, मैं आपको सुन सकता हूं, मुझे आपकी एक-एक बात सुनाई दे रही है, जो भी आप मुझसे माइंड में बोल रहे हैं, लेकिन सर, मैं बहुत परेशान हूं, यह सब मेरे साथ क्या हो रहा है? मुझे मेरे पापा की भी वह बातें सुनाई दे रही हैं, जो वह मुझसे माइंड में बोल रहे हैं. मैं पूरे होश में हूं और मैं पागल नहीं हूं, लेकिन मुझे नहीं पता की ये मेरे साथ क्या हो रहा है."

मेरे ऐसे बोलते ही मुझे वो अंदर आने के लिए कहते हैं और हमेशा की तरह खुद बिस्तर पर बैठ कर मुझे बिस्तर के सामने सोफे पर बैठने कहते हैं.

इसके बाद हम दोनों के बीच पहली बार माइंड कम्युनिकेशन होता है, हम दोनों एक दूसरे के सामने मौन बैठ जाते हैं और माइंड में बात करना शुरू करते हैं.

वे मुझसे पूछते हैं कि, "तुम्हारा सीनियर कौन है?"

मैं उत्तर देता हूं कि, "राजनीति के क्षेत्र में मेरे सीनियर आप है"

वो तुरंत कहते हैं कि, "मैं तुम्हारा सीनियर नहीं हो सकता, क्योंकि, तुम जो भी मुझसे माइंड में कहते हो, वो मैं सुन सकता हूँ और इस हिसाब से तुम मुझसे पद में बड़े हो"

यह सब सुन कर मैंने कहा कि, "सर, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा, आप क्या बोल रहे हैं, आप कबसे माइंड में बात कर सकते हैं? आपके अलावा और कौन-कौन कर सकता है? ये सब क्या हो रहा है?" मैंने पूछा.

Free ebook from www.advaikmalik.com

इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि, जब उन्होंने सरकारी नौकरी ज्वाइन करी और गोपनीयता की कसम खाई कि, वो सरकारी कार्य से जुड़ी किसी भी चीज को दूसरों तक जाहिर नहीं करेंगे, उसके कुछ दिन बाद से ही उन्हें माइंड कम्युनिकेशन का एहसास होना शुरू हुआ.

उन्होंने बताया कि, उनकी पहली पोस्टिंग निगम कमिश्नरेट पर हुई और जब भी वे कमिश्नर के केबिन में जाते, कमिश्नर उन्हें सामने कुर्सी पर बैठ जाने बोल कभी अपनी फाइलों पर तो अभी अपने कंप्यूटर पर कुछ काम करने लग जाता, लेकिन वो कमिश्नर उनसे क्या काम करवाना चाहता है, उसे कौन सी फाइल कब चाहिए, उसे किन से मिलना है, यह सब बातें कमिश्नर के बिना बोले ही शिवनाथ जी को सुनाई देने लग जाती, जैसे मानो वह खुद ही सामने से उन्हें यह सब बोल रहा हो.

शुरू में उन्होंने इन सब को नजरअंदाज किया लेकिन जब यह बार-बार होने लगा तो उन्हें लगने लगा कि, शायद उनकी मानसिक स्थिति खराब हो रही है, और उन्होंने यह सब अपनी वाइफ से डिस्कस किया कि, उन्हें अजीब आवाजे सुनाई देती हैं. इस पर उनकी वाइफ ने कहा कि, "यह सब ज्यादा वर्क के कारण है और वे दोनों कल डॉक्टर से मिलने जाएंगे."

अगले दिन जब वे डॉक्टर से मिलने गए तो डॉक्टर ने उन्हें समझाया कि, "उन्हें इस बात को लोगों से छुपा कर रखना पड़ेगा क्योंकि अगर यह बात सामने आती है कि, उनकी मानसिक स्थिति खराब है, तो इससे उनकी सरकारी नौकरी पर खतरा आ जाएगा."

उस दिन से कई वर्षों तक शिवनाथ जी इसी डर के साथ काम करते रहे, उन्हें ना सिर्फ कमिश्नर की बल्कि नेताओं की और

Free ebook from www.advaikmalik.com

हर उस व्यक्ति की जो उनसे पद पर, पैसे या पॉवर में बड़ा होता उनकी बातें उन्हें सुनाई देती. कुछ लोग उन्हें सीधे आदेश देते तो कुछ उन्हें क्या चाहिए सिर्फ वह बता कर चले जाते.

किस काम पर क्या करना है वो शिवनाथ जी अपने कमिश्नर से पूछते, कुछ का उत्तर वो सीधे दे देता और कुछ के उत्तर कमिश्नर के बिना बोले ही उन्हें सुनाई दे जाते, और वो उसी अनुसार सही-गलत को अलग रखते हुए उन्हें जो काम बोला जाता वो कर देते.

ऐसे ही वर्षों बीत गए, कई कमिश्नरों का ट्रान्सफर हुआ, नए कमिश्नर आए, पुराने गए, पर जो कभी नहीं बदला वह कमिश्नरों का उन्हें आदेश देना, बोल कर भी और बिना बोले भी.

इसके बाद उन्होंने बताया कि, उन्हें अब इस बात पर विश्वास हो चला था कि, उन्हें स्किजोफ्रेनिया है, लेकिन एक दिन उनका ध्यान उस पीयून रामलाल पर गया जो उनके आने से भी कई वर्षों पहले से वहाँ काम कर रहा था और उसी साल रिटायर होना था, बस दो महीने ही बचे थे उसके रिटायरमेंट होने के लिए.

शिवनाथ जी को एहसास हुआ कि, रामलाल में भी एक बहुत बड़ी अजीब बात थी, वो हर व्यक्ति को जब पानी चाहिए होता, पानी ला देता, जब चाए चाहिए होती चाय ला देता, जिस टेबल में जो फाइल चाहिए होती, जो रजिस्टर, जो पेन, उसे सब पता होता, उसे यहाँ तक ये भी पता होता, कि, दफ्तर में आए किस व्यक्ति से कितना घूंस मांग कर किस बाबू या अधिकारी को देना है. जबकि, वो खुद उसमें से एक भी पैसा नहीं रखता.

फाइनली शिवनाथ जी उससे पूछ देते हैं कि, "उसे यह सब कैसे पता चल जाता है", इसके उत्तर में रामलाल कहता है कि, उसे नहीं पता बस उसे सुनाई दे जाता है, जब भी ऑफिस का कोई भी अधिकारी या कर्मचारी उससे कुछ भी बोलना चाहता है, तो

Free ebook from www.advaikmalik.com

उसे पहले से ही वो सुनाई दे जाता है, और ऐसा उसके साथ शुरू से हो रहा है जब उसने ऑफिस ज्वाइन किया.

रामलाल की यह बात सुन कर शिवनाथ जी तुरंत अपने घर चले जाते हैं, अगले दिन जब वो ऑफिस जाते हैं तो उन्हें पता चलता है कि, रामलाल को रात को एंटी करप्शन वालों ने गिरफ्तार कर लिया है और उसके घर पर ऑफिस के गोपनीय कागज मिले हैं जिसके कारण उसे राजद्रोह की धाराओं पर गिरफ्तार किया गया है.

शिवनाथ जी बहुत दुखी हो जाते हैं तब ही हरीश, यानी उनके ऑफिस का नया पीयून, 28-30 साल का लड़का जिसका उस दिन ज्वाइनिंग का पहला दिन होता है वो उन्हें बताता है कि, उन्हें कमिश्नर बुला रहा है.

जैसे ही वो कमिश्नर के केबिन में जाते है, कमिश्नर बोलता है कि, "देखा रामलाल ने कल सरकारी कार्यों के प्रति गोपनीयता की अपनी कसम को तोड़ दिया और परिणाम हम सबके सामने है, खैर बैठो मैं तुम्हें कुछ महत्वपूर्ण चीजें बताता हूँ, जिससे तुम्हें समझ आ जाएगा कि, यह सब क्या हो रहा है."

कमिश्नर शिवनाथ जी की तरफ देखता है और उन्हें माइंड में बोलता है कि, उन्हें जिनके भी आदेश सुनाई देते हैं वो उनसे श्रेष्ठ मानव हैं, वे पद में और शक्ति में हमसे ऊपर हैं, ऐसे लोगों के आदेशों को मानना हमारा कर्तव्य है.

कमिश्नर आगे बोलता है कि, "इसके अलावा लाखों में कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जिनकी वो बातें तो तुम्हे सुनाई दे रही है कि, वो तुमसे क्या करवाना चाहते हैं, लेकिन वो तुम्हें कोई स्पष्ट आदेश नहीं दे रहे हैं क्योंकि उन्हें खुद पता नहीं होता कि, वो ऐसा कर सकते हैं, ऐसे लोगों से तुम्हे दूरी बना कर रखनी है. सरकारी

Free ebook from www.advaikmalik.com

प्रक्रियाओं की जानकारियाँ ऐसे लोगों को कभी नहीं होनी चाहिए तुम्हे इस बात का ख्याल रखना है. क्योंकि ये सब विपक्ष के लोग हैं."

इतना कहने के बाद शिवनाथ जी मुझे कहते है कि, जिस दिन मैं पहली बार उनसे मिलने आया, उस दिन उनके पास पहले ही फोन आ गया था कि, मैं उनसे मिलने आने वाला हूँ, और मैं उन्ही विपक्ष के लोगों में से एक हूँ."

यह सुन कर मैंने बोला कि, "लेकिन मैं और आप तो दोनों एक ही पार्टी को सपोर्ट करते हैं तो मैं विपक्ष कैसे? "

तो उन्होंने बताया कि, विपक्ष का मतलब ऐसे लोग जिनका इस सिस्टम पर बिल्कुल विश्वास नहीं है और वे लोग जो इस सिस्टम को बदलना चाहते हैं, वो विपक्ष के लोग होते हैं.

ऐसे लोग बहुत कम है पर हैं और इनमें से भी बहुत लोग कुछ समय में हार मान कर सिस्टम को स्वीकार लेते हैं तो कुछ खुद इस सिस्टम के बड़े पदों में चले जाते हैं, लेकिन जब तक ऐसे लोग इस सिस्टम पर विश्वास न करते हुए इसे बदलना चाहना नहीं छोड़ते तब तक वे विपक्ष के लोग ही होते हैं और ऐसे लोगों से इस सिस्टम की जानकारी को दूर रखना ही सबसे जरुरी सरकारी कार्य है"

ये सब सुन कर मैंने उनसे पुछा कि, "आपने तो मुझे वो सब बता दिया जो आपको कभी नहीं बताना था, अब क्या होगा, आप खुद सिस्टम के विरुद्ध हैं क्या?"

इसके बाद शिवनाथ जी ने फिर से मुझे माइंड में एक लाइन बोली जिसके बाद मैं वहाँ से घर आ गया. शिवनाथ जी ने मुझसे कहा कि, अब उनके साथ उससे भी बुरा होगा जो रामलाल के

Free ebook from www.advaikmalik.com

साथ हुआ था, और मैं जितना वहाँ रहूँगा उन्हें उतनी ही सजा मिलेगी.

यह सुन कर मैं वहाँ से चला गया. उन्होंने कहा ही था कि, वो इसके बाद मुझे वहाँ नहीं मिलेंगे, और ऐसा ही हुआ, अगले दिन जब मैं उनके घर फिर गया तो घर में ताला था. उनका नंबर स्विच ऑफ था. कुछ दिन बाद उनके फेसबुक पर पोस्ट आया कि वो बैंगलोर में हैं, एक फोटो भी थी, मैंने इस बात पर विश्वास किया की वो सही हैं, पर उनके साथ कुछ बुरा नहीं हुआ है इस बात पर मेरा विश्वास नहीं हो सक रहा था.

Free ebook from www.advaikmalik.com

अस्त्र निर्माण के तरीके का पता चलना

मुझे अब इतना तो क्लियर था कि, सरकारी अधिकारी और कर्मचारी, मेरे माइंड की बात सुन सकते हैं, और अब मुझे इसी का फायदा उठाना था.

मैं सीधे ऑफिस पहुँचता हूँ, जहाँ दीप्ति ने काफी दिन से काम सम्भाल रखा था.

मेरे उसके केबिन में पहुँचते ही वो मेरे गले लग जाती है और कहती है कि, "तुम कहाँ चले गए थे? मैं वापस आई तो तुम नहीं थे, लोगों ने बताया कि, तुम राजधानी गए हो, तुम्हारा फ़ोन भी नहीं लग रहा था, दिनेश जी को फोन किया तो उन्होंने कहा कि, आपके पापा ने मुझसे बात कराने से मना किया है. मुझसे ये सब अकेले नहीं सम्भल पाएगा, कंपनी का काम तुम्हारे बिना मुझसे नहीं होगा, तुम साथ होते हो तभी होता है."

मैं दीप्ति को कहता हूँ कि, "दीप्ति हम आम लोगों से बहुत सारी बात छुपाई जाती हैं, पता है गवर्नमेंट ऑफिसर और पॉलिटिशियन, बिजनेसमैन ये लोग माइंड में एक दूसरे को सुन सकते हैं."

"क्या बोल रहे हो हो यार, तुम्हे क्या हो गया है" दीप्ति कहती है.

मैं उत्तर देता हूँ कि, "दीप्ति, मैंने डीसाइड कर लिया है कि, मुझे अब मेयर बनना है, वो भी अभी."

दीप्ति कहती है कि, "ये कैसे हो सकता है? "

Free ebook from www.advaikmalik.com

मैं बोलता हूँ कि, "दीप्ति, देखो पार्षद चुनाव हुए दो साल हो गया है और एक पार्षद, सैयद गफ्फार जी का चुनाव के बाद देहांत हो गया था लेकिन अभी तक वहाँ दोबारा चुनाव नहीं हुआ है. इसी बात का मैं शिकायत पत्र बनाऊंगा और उसे पहले कलेक्टर कार्यालय में जमा करा कर उसकी पावती ले लूँगा. उसके बाद कलेक्टर से मिल कर पूछुंगा कि, वो तुंरत चुनाव करने के लिए क्या कर सकते हैं? जिस बात का वो कोई जवाब नहीं देंगे, इसी बात को पत्र में आधार बना कर मैं इलेक्शन कमिशन से मिलूँगा और उसके बाद हाई कोर्ट चला जाऊंगा. इतना सब करने से तो तुरंत चुनाव होगा ही."

"ये सब ठीक है पर तुम चुनाव कैसे जीतोगे, और उसके बाद मेयर कैसे बनोगे?" दीप्ति पूछती है.

मैं दीप्ति का हाथ पकड़ कर उसे समझाते हुए कहता हूँ कि, "दीप्ति, बिजली, पानी, प्रॉपर्टी टैक्स, इलाज, राशन ये सब फ्री देने का वादा करने से तो मैं वर्ड में जीत ही जाऊंगा. जनकांग्रेस के अभी 70 में से सिर्फ 35 पार्षद हैं और उनका मेयर है, मेरे जीतने से जनकांग्रेस या कमल पार्टी मैं जिसको भी समर्थन करूँगा उसका मेयर बन जाएगा. और मेरी समर्थन की शर्त ही रहेगी मेरा खुद मेयर बनना. बाकि दस लाख में तो पार्षद बिक ही जाते हैं, ज्यादा हुआ तो चार पांच पार्षद भी खरीद लूँगा"

"तुम पूरे पॉलिटिशियन हो गए हो" दीप्ति बोलते हुए कमरे से बाहर चली जाती है.

"मैं लैपटॉप से लैटर तैयार करता हूँ, और उसका प्रिंट करके कलेक्टर कार्यालय के लिए निकल जाता हूँ."

Free ebook from www.advaikmalik.com

निगम और पुलिस को आदेश देना

कलेक्ट्रेट के रास्ते में मुझे नगर निगम के अधिकारी कुछ ठेले वालों को भगाते हुए दिखते हैं, मैं कार रोक कर वहाँ जाता हूँ और निगम अधिकारीयों से बोलता हूँ, कि, "क्या आपने इन सभी को यह स्थान खाली करने का नोटिस दिया है?"

इसके आगे मैं माइंड में आदेश देता हूँ कि, "आप सभी लोग यहाँ से चले जाएँ."

निगम के सभी अधिकारी बहुत अजीब बर्ताव करने लगते हैं. कुछ मेरी फोटो खीचने लगते हैं, तो कुछ लोग आपस में बातें करने लगते हैं. मेरे अगल-बगल भी बहुत लोगों की भीड़ लग जाती है.

थोड़ी देर में वो अपनी गाड़ी में बैठ कर वहाँ से चल देते हैं. मुझे काफी अच्छा लगता है कि, मेरे आदेश के बाद निगम के अधिकारी वहाँ से हट जाते हैं, लेकिन तब ही मैं देखता हूँ कि, ट्रेफिक वाले मेरी कार को टोइंग वैन से ले जा रहे हैं.

मैं उन्हें आवाज देता हूँ लेकिन वो नहीं सुनते.

इतने में ही मेरे बगल में खड़े एक बाइक वाले को मैं माइंड में आदेश देता हूँ कि, "आप मुझे उस टोइंग वैन के पीछे ले चले."

Free ebook from www.advaikmalik.com

उसके बाद मैं उसे कहता हूँ कि, "भाई प्लीज, मुझे मेरी कार तक ले चलोगे क्या?"

वो लड़का मुझे कार के पीछे ले आता है. टोइंग वैन कार को वहाँ से करीब के थाने में ले जाती है.

मैं भी थाने पहुँचता हूँ और अपनी कार के पास खड़े पुलिस अधिकारी के पास पहुँचता हूँ. वो तुरंत मुझे कहता है कि, "सर, कार रोड में ट्रेफिक के बीच में थी इसलिए हमने इसे उठाया है, आप प्लीज पुलिस अधीक्षक जी से बात कीजिये."

ये सुन कर मैं उस लड़के की तरफ देखता हूँ, वो मुझे कहता है कि, "चलिए मैं आपको पुलिस अधीक्षक कार्यालय तक छोड़ दूं."

मैं पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुँचता हूँ और सीधे पुलिस अधीक्षक के कक्ष के बाहर पहुँच जाता हूँ.

मेरे हाथ में कोई भी कागज नहीं था, मैं पहुँच कर वहाँ के गार्ड से न जाने क्यों पुलिस अधीक्षक का नाम लेते हुए कहता हूँ कि, "मुझे मेरे दीपक झा जी से मिलना है." मैंने वो नाम भी वहीँ बोर्ड में पढ़ा था.

मेरी इतनी बात सुनते साथ ही वो अधिकारी तुरंत बगल वाले कमरे में जा कर वहाँ बैठे अन्य लोगों को बोलता है कि, "नए कलेक्टर साहब आए हैं."

पुलिस अधीक्षक और कलेक्टर का कार्यालय अगल-बगल ही होता है, मैं इतना सुन कर वहाँ से बगल में कलेक्टर कार्यालय में चल देता हूँ. वहाँ कलेक्टर के कैबिन तक मुझे एक भी अधिकारी या कर्मचारी जाने से नहीं रोकता है.

Free ebook from www.advaikmalik.com

मैं अन्दर कैबिन का दरवाजा खोल कर देखता हूँ तो कुर्सी खाली होती है, मैं वहाँ से जैसे ही बाहर आ कर देखता हूँ मुझे एक प्यून दिखता है, उससे पूछने पर कि, "कलेक्टर साहब कहाँ हैं?" वो कहता है कि, नए कलेक्टर साहब आने वाले हैं, तब तक इंचार्ज अपर कलेक्टर जयश्री मैडम है, जो ऊपर फर्स्ट फ्लोर में मिलेंगे.

Free ebook from www.advaikmalik.com

वो अलग फर्स्ट फ्लोर

कलेक्ट्रेट कार्यालय अंग्रेजों के ज़माने की बिल्डिंग में था, और वहाँ की सीढियां गोल किले की तरह थी. मैं बिना किसी कागज के साथ अपर कलेक्टर जयश्री मैडम से मिलने पूरे विश्वास के साथ वो सीढियां चढ़ना शुरू करता हूँ. अचानक से मुझे एहसास होता है कि, मेरे अगल-बगल की सब चीजें घूम रही हैं, और मैं किसी दूसरे ही फर्स्ट फ्लोर में पहुँच जाता हूँ. उस फ्लोर से नीचे सब कुछ बहुत छोटा दिखाई दे रहा था.

वहाँ पुलिस, वकील, और बहुत सारे लोग थे, माहौल पूरा सरकारी ऑफिस जैसा ही था लेकिन किसी के पास कोई कागज नहीं था, हाँ कंप्यूटर जरुर लगे हुए थे. मुझे बहुत हैरानी होती है.

मैं वहाँ ऑफिस के अन्दर पूछता हूँ कि, "जयश्री मैडम कहाँ हैं?" सभी लोग दाहिने तरफ बड़ी हैरानी के साथ इशारा करते हैं. मैं दाहिने वाले कमरे में जाता हूँ.

बड़ी हैरानी की बात होती है कि, मैं सीधे कमरे का दरवाजा खोल लेता हूँ, और वहाँ का गार्ड, पुलिस कोई मुझे नहीं रोकता. बल्कि वो लोग को मैं आपस में बात करते सुनता हूँ कि, "मैं वहाँ कैसे आ गया?"

कमरे का दरवाजा खोलने पर मुझे जयश्री मैडम की जगह मेरी बहन निधि दीदी बैठी दिखाई देती है. मेरी हैरानी का कोई ठिकाना नहीं रहता. मैं उनसे कहता हूँ कि, "दीदी, नीचे वाले लोगों पर ऊपर वाले बहुत अत्याचार कर रहे हैं."

Free ebook from www.advaikmalik.com

वो मुझसे पूछती है कि, "तुम क्या चाहते हो?"

मैं बोलता हूँ कि, "मुझे इसे सुधारना है, मुझे मेयर बनना है."

"ठीक है, शाम चार बजे तक हो जाएगा, तुम्हारे पास कॉल आ जाएगी."

इतना बोलते साथ ही एक अधिकारी मुझे "सर आपका काम हो जाएगा" कहता हुआ बाहर ले आता है. मैं उससे कहता हूँ कि, "मेरा नम्बर कहाँ है मैडम के पास"

"सब है सर, हो जाएगा, आप बस इन्तेजार कीजिए."

मैं यह सुनने के बाद मैं रोड से ऑटो करके वापस अपने ऑफिस आ जाता हूँ. मुझे बहुत हैरानी तब होती है जब ऑटो वाला मुझे ऑफिस छोड़ने के बाद पैसा नहीं लेता और कहता है, "भैया आप हमारे ऑटो में बैठे मैं धन्य हो गया." रास्ते भर वो ऑटो वाला मुझसे ऐसे बर्ताव करता है मानो, मैं कोई बहुत बड़ा नेता हूँ, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था.

Free ebook from www.advaikmalik.com

फिर जब सब कुछ बदल गया

मैं ऑफिस में अपने स्वीट में था, दीप्ति भी मेरे साथ थी. उसको मैंने कहा कि, "कार थाने में है." इस बात को सुन कर दीप्ति नाराज थी. तब ही मुझे ऑफिस रिसेप्शन से फ़ोन आता है कि, माँ-पापा आए हैं.

मैं नीचे जा कर देखता हूँ तो माँ-पापा ड्राईवर दिनेश के साथ मेरी कार ले कर ऑफिस आए होते हैं. पापा मुझसे कहते हैं "चलो तुम्हे किसी से मिलवाना है."

मैं कहता हूँ "मुझे किसी से नहीं मिलना"

तब ही माँ भी कहने लगती है, "चलो बेटा, बहुत जरुरी है, समझ बात को" ऐसा बोल कर माँ मेरा हाथ पकड़ कर मुझे कार में बैठा लेती है.

दिनेश जी कार चला कर हमें एक हॉस्पिटल जैसे जगह लाते हैं, जहाँ कार से उतरते साथ ही चार, लोग मुझे पकड़ कर एक इंजेक्शन लगा देते हैं.

मुझे जब होश आता है तो मैं हॉस्पिटल के बैड में था और मेरे सामने माँ, पापा और दीदी और मेरी कंपनी के दो स्टाफ अरविन्द और दिनेश जी थे.

छः माह तक मेरा घर में ही पता नहीं किस चीज का इलाज चलता है, मुझे उसी दौरान पता चलता है कि, दीप्ति की दूसरी जगह शादी हो गई है.

Free ebook from www.advaikmalik.com

मेरी कंपनी भी पूरी तरह बंद हो गई होती है और मेरे ऊपर कार लोन और पर्सनल लोन की किश्त भरने का दबाव होता है, जिसे छः माह से माँ-पापा दे रहे होते हैं.

Free ebook from www.advaikmalik.com

Free ebook from www.advaikmalik.com

किताब के बारे में

कलियुग में जो युद्ध होगा उसका नाम होगा - लोकयुद्ध.
ये है - महाभारत के आगे की कहानी.
पढ़िए इसका पहला भाग - जंग की शुरुवात.

माइंड कम्युनिकेशन और थॉट कंट्रोलिंग जैसी चीजों का इस्तेमाल इस दुनिया में ताकतवर लोग और सरकारें आम जनता को कंट्रोल करने के लिए कर रही है.
लेकिन ये शक्तियाँ तो सिर्फ शुरुवाती चरण है, उस युद्ध का जो युगों से चला आ रहा है, दो ऐसी विचारधाराओं के बीच जो एक दूसरे से पूरी अलग है.
क्या होगा इस युद्ध का परिणाम, कौन जीतेगा, कौन हारेगा और अभी सत्ता किसके हाथ में है, ये सब जानने के लिए पढ़िए, देश की पहली हिंदी पॉलीटिकल साइंस फिक्शन नॉवेल "लोकयुद्ध" का पहला भाग - "जंग की शुरुआत".

To Contact Author:
www.advaikmalik.com
@advaikmalik

Goodwriters.in

BOOK AVAILABLE
Flipkart GET IT ON Google Play
amazon amazonkindle

POLITICAL SCI-FI
ISBN 978-93-5373-318-6
9 789353 733186